ISSN2393-8838
Date of Publishing 19th March Vol. No.30 Issue No.3
MARCH 2019
Rs.10/-

मासिक

इसलाहे समाज

समाज सुधारक पत्रिका

इस्लाम अम्न व शान्ति का ध्वजा वाहक है उसके मानने वाले आपसी प्यार, मुहब्बत और सदभावना पर यक़ीन रखते हैं।

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द

1

(जमाअती खबर)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की सरपरस्ती में हरयाणा में आतंकवाद विरोधी सेमीनार का आयोजन

१३ जनवरी २०१९ रविवार को प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस हरयाणा के द्वारा और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की सरपरस्ती में मसाजिद के इमामों का प्रशिक्षण और आतंकवाद विरोधी सेमीनार आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता सूबे के अमीर डा० ईसा खान अनीस जामई ने की। विशेष अतिथि की हैसियत से मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना हारून सनाबिली ने शिर्क त की। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव ने अपने संबोधन में कहा कि आतंकवाद के लिये इस्लाम में कोई गुंजाइश नहीं, इस्लाम एक शान्ति पसन्द धर्म है और जो आतंकवादी है वह मुसलमान हो ही नहीं सकता। जामिया अबू बक्र सिददीक अल इस्लामिया के डायरेक्टर मौलाना अज़हर मदनी ने सेमीनार को संबोधित करते हुए कहा कि हकीकी प्रचारक मानवता का शुभचिंतक और अम्न व शान्ति का झण्डा वाहक होता है और अम्न व शान्ति की स्थापना और बढ़ावा देना ही उसका लक्ष्य होता है ताकि इन्सान अपने रब की खुशी के लिये उसके प्रति रहमत और भला साबित हो और दुनिया व आख़िरत में सफल हो जाए। इस आतंकवाद विरोधी सेमीनार से संबोधित करने वाले सभी वक्ताओं ने आतंकवाद की कड़े शब्दों में निन्दा की।

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस हिन्द के सचिव मौलाना अब्दुर्रहमान सलफी ने कहा कि सूबाई जमीअत पहले से ज़्यादा ताक़त के साथ बुराइयों के खात्मे के लिये मैदान में उतरना चाहती है, इमाम हज़रात हमारा भरपूर सहयोग और साथ दें।

सेमीनार की अध्यक्षता प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस हरयाणा के अमीर डा० ईसा खान जामई ने की और संचालन के फराइज़ मौलाना मुहम्मद मुश्ताक नदवी ने अंजाम दिये। इस सेमीनार में लगभग सौ इमामों को मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की तरफ से इस्लामी किताबें, तफसीर और सूबाई जमीअत की तरफ से एक कम्बल तोहफे के तौर पर दिया गया। इस सेमिना में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी को भी शरीक होना था लेकिन महत्वपूर्ण जमाअती कामों में व्यस्त होने की वजह से शरीक नहीं हो सके। उन्होंने अपने सन्देश में आतंकवाद विरोधी सेमीनार के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि मर्कज़ी जमीअत ने आतंकवाद के खिलाफ जो अभियान शुरू किया है, मुझे आशा है कि आप लोग आतंकवाद के खिलाफ अभियान में प्रभावी रोल अदा करेंगे। उन्होंने अपने सन्देश में आतंकवाद की कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए इसे वर्तमान दौर का सबसे बड़ा नासूर क़रार दिया और कहा कि इस्लाम अम्न व शान्ति का ध्वजा वाहक है उसके मानने वाले आपसी प्यार, मुहब्बत और सदभावना पर यक़ीन रखते हैं। आतंकवाद का इस्लाम धर्म से कोई संवन्ध नहीं है क्योंकि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता।

मासिक

इसलाहे समाज

मार्च 2019 वर्ष 30 अंक 3

रज्बुल मुरज्जब 1440 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़्क़

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये
❑	टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. आतंकवाद विरोधी सेमीनार 2
2. अच्छा कर्म 4
3. सऊदी युवराज मुहम्मद बिन सलमान और उनकी कल्याणकारी सेवाएं 6
4. औलाद का प्रशिक्षण 8
5. गुनाह को मिटा देने वाले कर्म 9
6. रजब के महीने में प्रचलित बिदअत 12
7. आस्था का महत्व 15
8. बड़ा शिर्क 17
9. गुनाह से दीन व दुनिया की बर्कतों में कमी 18
10. इन्सान और रास्तबाज़ी 19
11. प्रेस विज्ञप्ति 20
12. ऐलाने दाखिला 22
13. अमीरे मोहतरम की अबू ज़हबी कांफ्रेन्स में शिर्कत और आतंकवाद की निंदा 23
14. इस्लाम में जानवरों के साथ सद्व्यवहार 25
15. तरहीब 27

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

अच्छा कर्म

नौशाद अहमद

किसी चीज़ को या किसी इन्सान को देख कर प्रभावित हो जाना एक प्राकृतिक बात है यह रूझहान संसार के हर हिस्से में पाया जाता है कोई इन्सान किसी की माल व दौलत को देख कर तो कोई किसी की परस्नाल्टी और नामवरी को देख कर प्रभावित हो जाता है।

लेकिन किसी के अच्छे होने का पैमाना उसकी परस्नाल्टी और माल व दौलत नहीं है बल्कि उसकी नेकी और भलाई है। यह एक ऐसा पैमाना है जो इन्सान को ऐसी पहचान देता है जो उसके लिये एक यादगार बन जाता है और यही पहचान इस संसार के स्वामी को प्रिय है।

सहीह बुखारी में एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो अल्लाह पर और परलय के दिन पर विश्वास रखता है उसे चाहिए कि या तो वह भली बात कहे या खामोश रहे। इसी तरह से एक दूसरी हदीस में है कि तुम में से सबसे बेहतर इन्सान वह है जो अल्लाह से खूब डरता हो।

इस्लाम धर्म का यह व्यापक सिद्धांत है कि हर इन्सान की करनी और कथनी में अन्तर नहीं होना चाहिए, उसका कोई भी कर्म ऐसा ना हो जिससे अल्लाह के किसी बन्दे का दिल दुख्ता हो किसी को कोई तकलीफ पहुंचती हो, उसके कर्म अल्लाह के बताए गये सिद्धांतों के अनुसार हों, उसके हर कर्म से नेकी का प्रदर्शन हो ऐसा न हो कि जुबान से अच्छी बातें कह रहा हो और व्यवहारिक स्तर पर उसका मामला कुछ और हो।

इन्सान की सोच का उसके जीवन पर बड़ा गहरा असर पड़ता है जो इन्सान सकारात्मक तरीके से सोचेगा, दूसरों के लिये कल्याण और शुभचिंतन की भावना रखेगा वह निसन्देह अच्छे इंसानों में गिना जाएगा। इसके विपरीत जो इन्सान नकारात्मक सोच रखेगा लोगों के साथ उसका व्यवहार गलत होगा तो वह किसी भी तरह से अच्छे इन्सानों में नहीं गिना जाएगा। इसलिये हम तमाम इन्सानों को एक दूसरे के साथ भलाई का व्यवहार करना चाहिए और हमें अच्छे और बुरे का स्तर भलाई और नेकी को मानना चाहिए और ऐसे इन्सान से प्रभावित होना चाहिए जिसके कर्म अच्छे हों और उन इन्सानों को भलाई की तरफ आमंत्रित करना चाहिए जो नेकी और भलाई की राह से भटक कर नकारात्मक सोच और कर्म में संलिप्त हो गये हों।

दुनिया में बड़े बड़े नामवर लोग गुजरे हैं लेकिन उनमें से ऐसे भी हैं जिनको दुनिया केवल उनके बुरे कर्मों की वजह से जानती है, इस लिये हमें ऐसे सत्य कर्म करने चाहिए जिससे दुनिया हमारे अच्छे कर्मों से याद करे।

इस संसार में इन्सान अच्छे कर्म करने के लिये भेजा गया है, हर इन्सान के सामने अच्छे और बुरे का अन्तर स्पष्ट है, यह संसार इन्सान की आजमाइश की जगह है यह ज़िन्दगी बड़ी कीमती है, दुनिया की परीक्षा में पास होने का मतलब यह है कि हमारे कर्म ऐसे हों जो हमें स्वर्ग में ले जाने का माध्यम बनें और कोई ऐसा कर्म नहीं करना

चाहिए जो हमारे लिये नरक की तरफ ले जाने और असफलता का माध्यम बने। अल्लाह से दुआ है कि वह हम तमाम इन्सानों को अच्छे कर्म करने की क्षमता दे।

मां बाप से कुछ बातें:

कुरआन में तज़किया का जो शब्द प्रयोग हुआ है उसका मतलब यह है कि इन्सान बुरी चीज़ों को छोड़ दे और अच्छी आदतों को अपना ले जो उसके चरित्र को बेहतर बनाती हैं क्योंकि यह इन्सान के दर्जे को बुलन्द करती हैं, बुरी आदतों से इन्सान का सम्मान घटता है। ज्ञान का चरित्र को बेहतर बनाने में बड़ा अहम रोल होता है इन्सान के पास जिस प्रकार का ज्ञान हो गा उसी के अनुसार उसका चरित्र डेवलप करेगा इसी लिये इस्लाम ने अच्छे ज्ञान और सकारात्मक ज्ञान पर बल दिया है और अज्ञानता के अंधेरे से निकल कर ज्ञान के उजाले में आने की अपील की है क्योंकि ज्ञान इन्सान को सही रास्ते पर ले जाता है।

बच्चे अपने बचपन में जो कुछ सीखते हैं उसका असर उनके जीवन के आखिरी दिनों तक बाकी रहता है इसलिये मां बाप को चाहिये कि बच्चों के रहन सहन और उनकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दें और आज आर्ट के नाम पर टीवी चैनलों पर जो नकारात्मक प्रोग्राम दिखाए जा रहे हैं उनसे बच्चों को दूर रखें। क्योंकि गफलत का परिणाम हमें स्वयं भुगतना पड़ेगा। घर के माहौल का बच्चों के जीवन पर बहुत गहरा असर डालता है और मां बाप और घर के दूसरे बड़े बुजुर्गों का चरित्र और उनकी आदतें ठीक रहेंगी तो बच्चों में अच्छी आदतों को अपनाने की ललक बढ़ेगी।

> अगर हर मां बाप यह संकल्प कर लें कि हम अपनी औलाद को झूठ चुगल खोरी, बैमानी और दूसरी बुराइयों से बचा कर रखेंगे तो फिर समाज में हर तरफ शान्ति ही शान्ति नज़र आयेगी और नफरत की भावना स्वयं ही ध ाराशायी हो जायेगी। यह हम सभी देश वासियों की संयुक्त जिम्मेदारी है कि हम देश को आगे बढ़ाने के लिये ऐसी पीढ़ी तैयार करें जो सकारात्मक विचार से लैस हो और हमारा देश एक विशिष्ट देश के रूप में पहचाना जाये

आज दुनिया में जो अशान्ति है वह हम इन्सानों की लापरवाही का परिणाम है, इन्सान के चरित्र के सुध ाार के माध्यम से ही संसार में अम्न व शान्ति, एकता, भाइचारा, सौहार्द और सदभावना स्थापित किया जा सकता है। इन्सान को बेहतर बनाने का सबसे अच्छा और प्रभावी दौर उसका बचपन होता है। अगर हर मां बाप यह संकल्प कर लें कि हम अपनी औलाद को झूठ चुगल खोरी, बैमानी और दूसरी बुराइयों से बचा कर रखेंगे तो फिर समाज में हर तरफ शान्ति ही शान्ति नज़र आयेगी और नफरत की भावना स्वयं ही ध ाराशायी हो जायेगी। यह हम सभी देश वासियों की संयुक्त जिम्मेदारी है कि हम देश को आगे बढ़ाने के लिये ऐसी पीढ़ी तैयार करें जो सकारात्मक विचार से लैस हो और हमारा देश एक विशिष्ट देश के रूप में पहचाना जाये और विकास के उस पायदान पर पहुंच जाए जहाँ तक पहुँचने का हमारे पूर्वजों ने सपना देखा था।

सऊदी युवराज मुहम्मद बिन सलमान और उनकी कल्याणकारी सेवाएं

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

युवराज शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान हफिजहुल्लाह की शख्सियत अत्यंत आकर्षक और सऊदी शहरियों की निगाह में मकबूल है इसकी वजह यह है कि अपने सम्माननीय पिता सलमान बिन अब्दुल अजीज़ की तरह कल्याणकारी और मानवता की सेवा से संबन्धित कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। आपने अपने नाम से एक चियरिटी फाउन्डेशन की स्थापना की है जिसका नाम मुहम्मद बिन सलमान अब्दुल अज़ीज़ चियरिटी फाउन्डेशन मिस्कुल खैरिया रखा है जिसकी देख भाल इस कमेटी की गवर्निंग कमीटी के सदस्यों के ज़िम्मे है। इस फाउन्डेशन का मक़सद यह है कि जारी योजनाओं को प्रगति दी जाए, सऊदी अरब नौजवानों को ज्ञान, अमल, साहित्य व सांस्कृति और साइंस व टेकनालोजी के मैदान में तरक़्क़ी देकर देश की सेवा के योग्य बनाया जाए।

युवराज शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान आले सऊद के कल्याणकारी कारनामों का अन्दाज़ा इन निम्नलिखित पदों से भी लगा सकते हैं जिन पर आप विराजमान हैं।

- शाह सलमान योथ सेन्टर के चियर मैन-इस केन्द्र की स्थापना शाह सलमान बिन अब्दुल अजीज़ के द्वारा अमल में आया था ताकि सऊदी नौजवानों की मदद और उनके संकल्पों को व्यवहारिक रूप देकर देश के प्रयासों को गति दी जा सके।
- किंग सलमान चेरीटेबल हाउसिंग सूसाइटी के उपाध्यक्ष और आप इस सूसाइटी की प्रबन्धक कमेटी के सुपरवाइज़र भी हैं। यह सूसाइटी विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों, समाजी माहिरीन और कम्यूनिटी के पदध ाारियों के द्वारा गठित की गई है ताकि कम आमदनी वाले लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।
- रियाज के गैर सरकारी सहायता प्राप्त मदारिस के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स के चियर मैन
- किंग अब्दुल अज़ीज़ सऊद सेन्टर के एगजीकिवटिव कमीटी के चियरमैन

इसके अलावा आपके ज़िम्मे पूर्व के पद भी ऐसे थे जिनसे मालूम होता है कि आप कल्याणकारी और इन्सानी कामों में कितनी रूचि रखते हैं और सऊदी अरब और वहां के अवाम की तरक्क़ी और उन्हें नई बुलन्दियों पर पहुंचाने के लिये अत्यंत उत्सुक हैं। उनमें से बाज निम्नलिखित हैं।

- इब्ने बाज़ चेरीटेबल फाउनडेशन के ट्रस्टीज बोर्ड के सदस्य
- रियाज़ क्षेत्र के चियरिटी एसोसिऐशन के उच्च सहयोग कोन्सिल के सदस्य
- रियाज़ में काइम चियरिटेबल सूसाइटी बराये हिफज़े कुरआन के बोर्ड आफ डारेक्टर्ज़ के सदस्य

❑ ख़ैराती एदारा जमीअतुल बिर के बोर्ड आफ डायरेक्टर्ज के सदस्य

❑ सऊदी मैनेजमेन्ट की एसोसीएशन के मान्यक (एज़ाज़ी) सदस्य

❑ मादक पदार्थों की रोक थाम के लिये नेशनल ऐसोसिएशन के मान्यक सदस्य

❑ एदारह बराये हस्तकला विकास के एजाज़ी सदस्यगण कोन्सिल के चियरमैंन

❑ शादी और खानदान की देखभाल के लिये स्थापित की गई इब्ने बाज़ चियरिटी एसोसीशन के संस्थापकों में से हैं।

यह तमाम पद बताते हैं कि युवराज शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान हफि० स्वयं एक संस्था की हैसियत रखते हैं और रिफाही कामों के द्वारा मानवता के कल्याण एवं विकास में आप काफी रूचि रखते हैं और सऊदी समाज के लिये अत्यंत उलफत और मुहब्बत रखते हैं और यही वजह है कि आप दर्जन भर से अधिक कमेटियों, ऐसोसिएशनों, संस्थाओं एवं संगठनों के सदस्य, अध्यक्ष या उनसे किसी पहलू से जुड़े हुए हैं।

सऊदी युवराज शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान अपनी खुदादाद योग्यताओं और बुलन्द राजनीतिक बुद्धिमत्ता के आधार पर विभिन्न अवसरों पर अनेक इनआमात से सम्मानित किए गये हैं और कई सभाओं में आपको सम्मानित किया गया है। इन पुरस्कारों में सबसे महत्वपूर्ण १३ जून २०१७ ई० को फारबस मैगज़ीन ने वली अहद (युवराज) मुहम्मद बिन सलमान को गलोबल चेन्ज लीडर के तैर पर चयनिय किया। बलोम बर्ग की वार्षिक सूचि के अनुसार २०१७ ई० में ५० लोगों में से तीन सबसे अधिक प्रभावी हस्तियों में से एक थे। २०१७ ई० के अंत पर अमरीकी टाइम्स मैगज़ीन ने अपने पाठकों के मतदान के द्वारा आप को पर्सन आफ दी इयर का सम्मान दिया।

विदेशी पालीसी मेगज़ीन ने आप को दुनिया के सौ चिंतकों और लीडरों की सूची में सबसे प्रभावी लीडर क़रार दिया। अमरीकी फोरबस मैगज़ीन की ७५ प्रभावी हस्तियों के चयन में वैश्विक एतबार से आठवें स्थान पर और अरब में आप पहले नंबर पर थे।

सऊदी अरब का भविष्य अत्यंत पुर्जोश, जवां हिम्मत, क्षमतापूर्ण हाथों में है। वली अहद मुहम्मद बिन सलमान और इन जैसे अन्य सऊदी नौजवान लीडरान जहां एक तरफ अपने अन्दर जोश एवं उत्साह रखते हैं, वहीं उनकी साफ सुथरी और बेहतरीन पालन पोषण और प्रशिक्षण ने इस जोश और जजबे की एक सीमा भी तय कर रखी है और उनके अन्दर इस्लामी शिक्षाओं का ज्ञान भी भरपूर मात्रा में है और वह ओलमा की निगरानी में काम करते हैं जिसकी वजह सी बहुत सी गलतियों से अल्लाह तआला उनको सुरक्षित रखे हुए है। अल्लाह तआला हरमैन शरीफैन (सऊदी) अरब और सभी देशों की हिफाज़त करे और नई पीढ़ी को अच्छे आचरण वाला और बुद्धिमत्ता दे ताकि सऊदी अरब को सहीह दिशा में विकास एवं प्रगति देते हुए मुसलमानों के दिलों की ध ड़कन बनाए और हमारे प्रिय देश इसको पक्का सच्चा दोस्त बनाए। आमीन

❑ ❑ ❑

औलाद का प्रशिक्षण

डा० मुहम्मद तैयब शम्स

इस संसार में इन्सान ही एक ऐसी हस्ती है जिनके वजूद से अम्न व शान्ति, भलाई और बरकत का सिरा जुड़ा हुआ है और इन्सान की शरारतों से हर जगह फितना व फसाद का बाज़ार गर्म हो जाता है। इन्सान को नेक या बुरा बनाने में मां बाप और घर की तरबियत (प्रशिक्षण) का बड़ा दख़ल होता है। औलाद की सहीह तालीम व तरबियत (शिक्षा एवं प्रशिक्षण) और उचित पालन पोषण से वह अच्छे इन्सान की शक्ल में समाज के सामने होता है गोया उनकी वजह से संसार एक खूबसूरत फूल बन जाता है और उनसे भलाई एवं बरकत जुड़ जाती है। इसलिये औलाद को अच्छी तालीम व तरबियत देना मां बाप के लिये ज़रूरी है। तमाम नबियों और पैगम्बरों ने अल्लाह से नेक औलाद की दुआ की और उन्हें बेहतरीन तालीम तरबियत दी। कुरआन में है ''ऐ हमारे परवरदिगार! तू हमें हमारी बीवियों और औलाद से आंखों की ठंडक दे और हमें परहेज़गारों का पेशवा बना''। (सूरे फुरकान-७४)

इसलिये औलाद की तरबियत में शुरू से ही ध्यान देने की ज़रूरत है और इस तरह पहल करने की ज़रूरत है। बच्चों की तरबियत में केवल पढ़ाने का ही नहीं बल्कि खेल कूद, हंसी मज़ाक और सवाल जवाब के विभिन्न तरीकों से बच्चों की जेहनी तरबियत करनी चाहिए और बच्चों को भी बड़ों और बुजुर्गों की मज्लिसों में शरीक करना चाहिये।

उमर बिन सलमा रजिअल्लाहो तआला अन्हो स रिवायत है कि मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की परवरिश में था और मेरा हाथ पलेट में घूमता था तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे फरमायाः ''बिस्मिल्लाह कह कर अपने दाएं हाथ से खाओ और इस जानिब से खाओ जो तेरे सामने है'' (बुखारी ५३७६, मुस्लिम १८.३०)

औलाद की तरबियत करते वक़्त उनसे प्यार मुहब्बत का बर्ताव करना चाहिए, अगर एक से अधिक औलाद हों तो उनके बीच में न्याय को बाकी रखना चाहिए, बेटा बेटी में अन्तर नहीं करना चाहिए।

औलाद को बचपन से ही नमाज़ रोज़ा हज्ज वगैरह इबादत में शरीक करना चाहिए। उनहें सलाम करने का तरीक़ा बड़ों का अदब व एहतराम करने का तरीक़ा बात चीत के आदाब, दुआएं, सब्र व शुक्र और सच बोलने की तलकीन करते रहना चाहिए, इसी तरह से उन्हें हर वह बर्ताव सिखाना चाहिए जिससे बच्चे के अन्दर सकारात्मक आदतें उत्पन्न हो सकें। बच्चों की तरबियत के दौरान यह ध्यान रखना चाहिये उनको नकारात्मक अर्थात बुरी आदतों मिसाल के तौर पर किसी का मज़ाक उड़ाना, ऐब निकालना, घमण्ड करना, झूठ बोलना, गीबत करना, चोरी करना, गाली गुलूज देना, वादा खिलाफी करना, और मामूली कारण के आधार पर संबन्ध तोड़ने से बचाना आवश्यक है। सहाब-ए-किराम अपने बच्चों को शुरू ही से अच्छी तरबियत करते थे उन्हें नमाज़ रोज़ा हज वगैरह इबादत में शरीक करते थे।

औलाद की ऐसी तरबियत करें कि औलाद समाज के लिये शुभचिंतक राष्ट्र एवं समुदाय और पूरी मानवता का सेवक बन सकें और मां बाप के लिये नेमत और रहमत बन जाएं।

गुनाह को मिटा देने वाले कर्म

हाफिज़ इब्ने हजर रह०

हम पर अल्लाह की कृपा व दया है कि उसने हमारे लिये ऐसे कर्म तय किये हैं जो हमारे गुनाहों का कफ्फारा (प्रायश्चित) कर सकें और हमारी गलतियों को मिटा सकें। इन कर्मों का वर्णन कुरआन और सहीह हदीसों में पाया जाता है।

१. मुकम्मल वजू करना और मस्जिद जानाः अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्या मैं तुम को ऐसी बात न बताऊं जिसकी वजह से यह गलतियों को मआफ करता है और दर्जात को बुलन्द करता है? सहाबए किराम ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल अवश्य बताइये। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया नापसन्दीदगी के बावजूद पूरा वजू करना, मस्जिदों की तरफ नमाज़ के लिये ज़्यादा चलना, एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तेज़ार करना। यही तो तुम्हारे दीन की सरहदों की हिफ़ाज़त है'' सहीह मुस्लिम (बहवाला सहीहुत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब-१८५)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरे पास रात को मेरे रब की तरफ से एक आने वाला (फरिश्ता) आया और कहा ऐ मुहम्मद! क्या तुम जानते हो कि मला-ए-आला (फरिश्ते) किस चीज़ के बारे में झगड़ रहे हैं, मैंने कहाः हां, गुनाहों के प्रायश्चित, दरजात की बुलन्दी, जमाअत के लिये चलने, ठण्डी रातों में पूरा वजूद करने और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इन्तेज़ार करने के बारे में (झगड़ा) करते हैं जो शख्स इन चीज़ों की हिफाज़त करेगा भलाई के साथ ज़िन्दा रहेगा और जिस की वफात इन पर होगी तो उसकी वफात भलाई के साथ होगी और वह अपने गुनाहों से ऐसे ही पाक व साफ हो जाएगा जैसे उसकी मां ने उसको उसी दिन जनम दिया हो।'' (सुनन तिर्मिज़ी,बहवाला सहीहुत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब)

२. अरफा और आशूरा का रोज़ाः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला के फज़्लो करम (दया, करूणा) से अरफा (९वीं ज़िल हिज्जा) का रोज़ा अगले और पिछले दो साल के गुनाहों का कफ्फारा होता है और आशूरा का रोज़ा पिछले (एक) साल के गुनाहों का कफ्फारा होता है'' (सुनन तिर्मिज़ी वहवाला सहीहुल जामे ३८५३)

३. रमज़ान का क़्यामः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने रमज़ान के महीने में ईमान और सवाब की उम्मीद से क्याम (इबादत) की अल्लाह तआला उसके पिछले गुनाहों को बख्श देगा। (सहीहैन बहवाला सहीहुल जामे ६४४०)

४. हज़ मबरूरः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हज मबरूर का बदला जन्नत ही है।

५. तंगदस्त (गरीब, परेशान हाल) को मआफ करनाः अबू हुरैरह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक ताजिर

लोगों को कर्ज़ दिया करता था, उसने अपने गुलामों को ज़ोर देकर कह रखा था कि जब तुम किसी तंगदस्त को देखो तो उसे मआफ कर दिया करो। मुमकिन है (इसकी वजह से) अल्लाह तआला हमें माफ कर दे (उसके इस अमल) से अल्लाह तआला ने (खुश होकर) उसको मआफ कर दिया। (फतहुल बारी ४/३०६)

६. बुराईयों के बाद नेकी करनाः कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''यकीनन नेकियां बुराइयों को दूर कर देती हैं''। (सूरे हूद-११४)

जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुआज़ रज़िअल्लाहो तआला अन्हो को यमन भेज रहे थे तो वसिय्यत करते हुए फरमायाः ऐ मुआज़ जहां कहीं भी रहो अल्लाह से डरते रहो और बुराइयों के बाद नेकियां करते रहो, इससे बुराइयां खत्म हो जाएंगी और लोगों के साथ अच्छे स्वभाव और मिलनसारी से पेश आओ'' (मुसनद अहमद सुनन तिर्मिज़ी बहवाला सहीहुल जामे-९७)

७. सलाम को फैलाना और लोगों से भले तरीके से बात करनाः मग़्फिरत (क्षमायाचना) वाजिब करने वाली चीज़ों में सलाम को रिवाज देना और लोगों से अच्छी बातें करना है। (मआरिफुल अखलाक खराइती, सिलसिलातुल अहादीसिस्सहीहा १०३५)

८. मुसीबत पर सब्र करनाः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला फरमाता है कि जब मैं अपने किसी मोमिन बन्दे को आज़माइश में डालता हूं और मोमिन बन्दा मेरी प्रशंसा बयान करता है तो वह अपने बिस्तर से पाक व साफ होकर इस तरह उठता है जैसे वह आज मां के पेट से पैदा हुआ हो और अल्लाह तआला फरिश्तों से कहता है कि मैंने अपने बन्दों को कैद व बन्द में रखा और आजमाइश में डाला (और उसने सब्र किया तो उसकी बीमारी की हालत का सवाब वैसे ही लिखो जैसे तुम लोग उसकी तन्दुरूस्ती की हालत में लिखा करते थे'' (मुसनद अहमद ४/१२३)

ऐ मुआज़ जहां कहीं भी रहो अल्लाह से डरते रहो और बुराइयों के बाद नेकियां करते रहो, इससे बुराइयां खत्म हो जाएंगी और लोगों के साथ अच्छे स्वभाव और मिलनसारी से पेश आओ''

९. पांचों वक्त की नमाज़ पाबन्दी से पढ़ना, जुमा और रमज़ान के रोज़े की पाबन्दी करना। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया पांचों नमाज़ें (एक नमाज़ से लेकर दूसरे नमाज़ तक) और जुमा से जुमा तक और रमज़ान से रमज़ान तक के दर्मियान में की हुई ग़लतियों को मिटाने वाली हैं शर्त यह है कि महा पापों (गुनाहे कबीरा) से दूर रहा जाए। सहीह मुस्लिम बहवाला शरह सहीह मुस्लिम, इमाम नव्वी ३/१२०)

१०. मुकम्मल वजू करनाः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई मोमिन या बन्दा वजू करता है और चेहरा धुलता है तो आखों से की गईं खताएं पानी या पानी के आखिरी क़तरा (बूंद) के साथ निकल जाती हैं और जब हाथ धुलता है तो जिन गुनाहों को हाथ से किया था वह सब पानी या पानी के आखिरी क़तरे के साथ निकल जाते हैं और जब पैर धुलता है तो पानी या पानी के आखिरी कतरा के साथ वह तमाम गुनाह बह जाते हैं जिनको पैर से चलकर किया यहां तक कि वह गुनाहों से पाक साफ हो जाता है (शरह सहीह मुस्लिम इमाम नौवी ३/१३५)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने ''सुब्हानल्लाही व बिहमदिही'' दिन में सौ बार पढ़ा तो उसकी तमाम ख़ताएं बख्श दी जाएंगी अगर्चे समन्दर की झाग के बराबर हो'' (सहीहैन बहवाला शरह सहीह मुस्लिम इमाम नौवी १७/२०)

११. अज़ानः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः निसन्देह मुअज्ज़िन के लिये मग़फिरत की दुआएं करती हैं वह तमाम चीज़ें जहां तक उसकी आवाज़ सुनी जाती है'' (मुसनद अहमद बहवाला सहीहुल जामे १६२६)

१२. नमाज़ः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम्हारा क्या ख्याल है उस आदमी के बारे में जिसके दरवाज़े के पास नदी है और वह इसमें पांच बार गुस्ल (स्नान) करता है तो क्या उसके शरीर पर कुछ मैल कुचैल बाक़ी रहेगा? सहाबा किराम ने जवाब दिया नहीं, उसके शरीर पर कुछ भी मैल कुचैल बाकी नही हरेगा। इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया ऐसे ही पांच वक्त की नमाज़ों की मिसाल है अल्लाह तआला इसके ज़रिये गुनाहों को मिटा देता है। (फतहुल बारी २/११)

१३. ज़्यादा से ज़्यादा नफल नमाज़ें पढ़नाः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ज़्यादा से ज़्यादा (नफल नमाज़ें) सजदे करो। अल्लाह के लिये तुम जो भी सजदा करोगे वह हर सजदे के बदले तुम्हारा एक दर्जा बुलन्द करेगा और एक गुनाह मआफ फरमाएगा। (शरह सहीह मुस्लिम इमाम नौवी ४/४५१)

> जो लोग एकटठा हो कर अल्लाह का ज़िक्र करते हैं और इससे केवल अल्लाह की खुशी चाहते हैं तो आसमान से पुकार लगाने वला आवाज़ देता है कि तुम (इस मज्लिस से उठकर इस हाल में वापस जाओ कि) तुम्हारे गुनाह नेकियों में बदल दिये गये।

१४. नमाज़ के लिये जानाः सहीह बुखारी में हज़रत अबू हुरैरह की रिवायत है जब बन्दा वज़ू करता है और मुकम्मल वज़ू करता है, फिर वह नमाज़ ही के मक़सद से मस्जिद जाता है तो उसके हर क़दम के बदले उसका एक दर्जा बुलन्द करता है और उसके गुनाह मिटा देता है (फतहुल बारी-२/१३१)

१५. अल्लाह तआला की समीपता की गर्ज़ से मज्लिसों में जानाः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो लोग एकटठा हो कर अल्लाह का ज़िक्र करते हैं और इससे केवल अल्लाह की खुशी चाहते हैं तो आसमान से पुकार लगाने वला आवाज़ देता है कि तुम (इस मज्लिस से उठकर इस हाल में वापस जाओ कि) तुम्हारे गुनाह नेकियों में बदल दिये गये। (मुसनद अहमद ३/१४२, मजमऊज्जवाइद १०/७६)

१६. सदक़ा करनाः क़ुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''तुम सदक़ा व ख़ैरात करो तो वह भी अच्छा है और अगर तुम इसे पोशीदा तौर पर मिस्कीनों को दे दो तो यह तुम्हारे गुनाहों को मिटा दे गा और अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल की ख़बर रखने वाला है'' (सूरे बक़रा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः सदक़ा गुनाहों को ऐसे ही खत्म कर देता है जैसे पानी आग को बुझाता है। (मुसनद अहमद)

रजब के महीने में प्रचलित बिदअत

अब्दुल मन्नान शिकरावी

इस्लाम में जीवन गुजारने के लिये जिन बातों की ज़रूरत है स्पष्ट शब्दों में इसको बता दिया गया है। अपने पालनहार को किन कर्मों से खुश किया जा सकता है और उसकी समीपता प्राप्त करने के लिये दुनिया और आखिरत की भलाई कैसे हासिल की जा सकती है। इसके बाद किसी को भी शरीअत में न कम करने का अधिकार है और न बढ़ाने का अधिकार, कमी करेंगे तो कोताही के मुजरिम, बढ़ाएंगे तो सीमा से आगे बढ़ने के मुजरिम। इसलिये इस बात पर बहुत जोर दिया गया है कि सीमा के अन्दर रह कर जिन्दगी गुज़ारी जाए वरना सभी कर्म अकारत एवं बर्बाद हो जाएंगे।

एक व्यक्ति इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैहि के पास आया और पूछने लगा कि मैं एहराम कहाँ से बांधूं आपने जवाब दिया कि जुल हुलैफा से यहाँ से अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बांधा था। उस व्यक्ति ने कहा कि मैं मस्जिदे नबवी, अल्लाह के रसूल की क़ब्र से एहराम बांधना चाहता हूं। आपने फरमायाः ऐसा न करो वरना मुझे डर है कि तुम फितने में पड़ जाओगे। उस व्यक्ति ने कहा कि इसमें फितने की क्या बात है? मैं चन्द मील ही तो बढ़ा रहा हूं। इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैहि ने जवाब दिया इससे बड़ा फितना और क्या हो सकता है कि तुम यह समझो कि मैंने वह फज़ीलत (सवाब) हासिल कर ली जिसमें अल्लाह के रसूल ने कोताही की। मैंने अल्लाह का फरमान सुना है ''जो लोग रसूल के हुक्म की मुखालिफ़त करते हैं, उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई ज़बरदस्त आफ़त न आ पड़े या उन्हें दर्दनाक अज़ाब न पहुंचे''। (सूरे नूर-६३)

सहाबए किराम रिजवानुल्लाही अलैहिम अजमईन, ताबईन व तबा ताबईन अइम्माए किराम रहमतुल्लाही अलैहिम का दीनी मसाइल को समझने का यही तरीका था वह दीनी मामलात व मसाइल में किसीभी कमी या ज़्यादती को जायज़ नहीं समझते थे।

इसलिये हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि शरीअत ने जो अहकाम जो अहकाम तय किये हैं उनका ख्याल रखा जाए और उनमें किसी प्रकार की कमी ज़्यादती न की जाए। अपनी तरफ से इन महीनों में किसी भी प्रकार की इबादत या अल्लाह को खुश करने का कोई ऐसा अमल विशेषता के साथ न किये जाए जिसका इस्लाम में कोई सुबूत न हो।

कुरआन करीम में यह आयत ''आज हमने दीन को मुकम्मल कर दिया'' नाज़िल होने के बाद दीन मुकम्मल हो गया। इसके बाद दीनी मसाइल व शिक्षाओं में अपनी तरफ से कुछ बढ़ाना बहुत ही संगीन जुर्म है। बाद के जमानों में कुछ लोगों ने खास अवसर पर कुछ खास दीनी मसाइल गढ़ लिये जिसकी इस्लाम में कदापि इजाज़त नहीं थी। इसी तरह से बाज़ महीनों और दिनों में भी अपनी तरफ से कुछ आमाल गढ़ लिये। इसी तरह से रजब के महीने में कुछ खुद की गढ़ी हुई इबादतें रायज कर लीं जिनको यहां संक्षिप्त में उल्लेख किया जा रहा है।

जाहिलियत के जमाने में मुश्रिकीन रजब के महीने का बड़ा सम्मान करते थे और इस महीने में खास तौर से रोज़ा रखते थे। खैरूल कुरून के बाद कुछ लोगों ने इस्लाम

में भी जाहिलीयत के जमाने की रिवायत को जारी व बाक़ी रखने की कोशिश की जबकि शैखुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया रह० के कथन के अनुसार रजब में रोज़े से संबन्धित सभी हदीसें जईफ बल्कि मौजूअ (गढ़ी हुई) हैं।

बाज़ लोग रजब के महीने में एक ख़ास नमाज़ पढ़ते हैं जिसका नाम वह सलातुर्रग़ाइब रखते हैं वह इसे जुमा की रात के पहले हिस्से में मग़रिब और इशा के दर्मियान अदा करते हैं जिसके बिदअत होने पर ओलमा का सर्व सम्माति (इत्तेफाक़) है। इमाम नौवी रह० से सलातुर्रग़ाइब के बारे में सवाल किया गया कि इसकी अदायगी की कोई फज़ीलत है या बिदअत है? इमाम नौवी रह० ने फरमाया यह बहुत ही खराब बिदअत है जिसको छोड़ना, इससे दूर रहना और इस बिदअत को करने वाले पर नकीर करना ज़रूरी है। हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जो हमारे दीन में ऐसी नई चीज़ पैदा करे जो हमारे दीन में नहीं है तो वह काबिले क़ुबूल नहीं है।

बाज लोग रजब के महीने में मदीना तैइबा की ज़ियारत करने जाते हैं और इसे रजबिया का नाम देते हैं। उनका ख्याल है कि यह सुन्नत है जबकि इसकी कोई असल नहीं है इसका कहीं कोई सुबूत नहीं है इसलिये इसको सुन्नत करार देने और इसे अल्लाह की समीपता का ज़रीआ समझना दुरूस्त नहीं।

रजब की २७वीं रात में बाज लोग महफिलें आयोजित करते हैं और समझते हैं कि यही इसरा और मेराज की रात है, इस रात में कलाम पेश किए जाते हैं, तराने और क़सीदे पढ़े जाते हैं जिसका खैरूल कुरून में कोई रिवाज नहीं था। इमाम इब्ने तैमिया रह० फरमाते हैं ''जिस रात के बारे में लोगों का ख्याल है कि वह मेराज की रात है इसमें न कोई क्याम साबित है और न इसके अलावा कोई और अमल''

कुछ लोग रजब के महीने में उमरा करने को बड़े सवाब का काम समझते हैं जबकि इसकी फज़ीलत के सिलसिले में शरीअत में कोई दलील नहीं है। हज़रत आइशा रज़िअल्लाहो अन्हा बयान करती हैं अल्लाह अबू अब्दुर्रहमान पर रहम करे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो भी उमरा किया मैं इसमें आप के साथ थी आपने रजब के महीने में एक भी उमरा नहीं किया।

बाज़ लोगों का रूटीन है कि वह रजब के महीने में ज़कात अदा करते हैं जबकि शरीअत में इसे खास करने की कोई असल नहीं है। लताइफुल मआरिफ में अल्लामा इब्ने रजब हंबली से एक कथन बयान किया गया है रजब महीने में खुसूसियत के साथ ज़कात निकालने की कोई शरई दलील नहीं है बल्कि जब माल पर एक साल पूरा हो जाये तो ज़कात वाजिब हो जाती है, उसे उसी वक़्त अदा कर देनी चाहिए कोई भी महीना हो। इसी तरह अल्लामा इब्ने अत्तार फरमाते हैं कि मौजूदा ज़माने में लोग रजब के महीने में खुसूसियत के साथ ज़कात निकालते हैं इसकी कोई दलील नहीं है बल्कि जब साल पूरा हो जाए, ज़कात अदा कर देनी चाहिए, वह कोई भी महीना हो। (अल मुसाजला बैना इज़्ज़ बिन अबुस्सलाम व इब्नुस्सलाह)

रजब के महीने में इमाम जाफर सादिक़ रह० के नाम का हलवा तक़सीम किया जाता है जो रजब के कूडें के नाम से एक गढ़ी हुई इबादत है। और इसके बारे में अजीब व गरीब किस्से कहानियां गढ़ ली गई हैं। इसी तरह शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० की विलादत की रात में महफिलें आयोजित की जाती हैं और शैख रह० के नाम पर जानवर ज़बह किये जाते हैं और ऐसे ऐसे काम अंजाम दिए जाते हैं जिनकी

शरीअत में किसी भी तरह से वैधता नहीं है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं तुम्हें अल्लाह से डरते रहने, सुनन और मानते रहने की वसियत करता हूं अगर्चे तुम पर कोई गुलाम ही अमीर क्यों न बना दिया जाए। मेरे बाद जो जीवित रहेगा वह बहुत सा मतभेद (इख़्तेलाफ) देखे गा। ऐसी सूरत में तुम्हारे लिये अनिवार्य है कि मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत याफ्ता खुल-फाए राशिदीन की सुन्नत को अनिवार्य समझना, उसे मज़बूती से थाम लेना और डाढ़ से मज़बूत पकड़ लेना। दीन में नये अविष्कार शुदा कामों से अपने आप को बचाए रखना क्यों कि (सवाब की नीयत से किया गया) हर नया काम बिदअत और हर बिदअत गुमराही है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खुतबे में यह भी फरमाते थे सबसे सच्ची बात अल्लाह का कलाम है और बेहतरीन हिदायत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिदायत (राह) है। दीन में पैदा किये गये काम बदतरीन काम हैं और हर नया काम बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत को अपनाना और आपके मार्गदर्शन को मज़बूती से थामना और बिदआत से बचना हर मुसलमान के लिये अनिवार्य है तभी निजात की उम्मीद की जा सकती है। वरना दुनिया और आखिरत में घाटा ही घाटा होगा।

❑ ❑ ❑

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। जिन सदस्यों को हार्ड कापी न मिल सके वह हमारी वेब साइट से इसलाहे समाज के हर अंक लोड कर सकते हैं इसके अलावा इसलाहे समाज की पीडीएफ फाइल अपने स्मार्ट फून पर भी मंगवाया जा सकता है। इसलिए इसलाहे समाज के सदस्यों से अनुरोाध है कि वह अपना वाट्सएप नम्बर और ईमेल आई डी कार्यालय को अवश भेजें ताकि हार्ड कापी न मिलने की सूरत में उनको पीडीएफ फाइल ईमेल या स्मार्ट फून पर भेजा जा सके। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

आस्था का महत्व

❑**अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज रह०**

अल्लाह तआला ने जिन्नों और इन्सानों को अपनी इबादत के लिये पैदा किया है और यही समझाने के लिये अपने रसूल भेजे और किताबें नाज़िल कीं अतः खूब ग़ौर करके इस हक़ीक़त को समझ लेना चाहिये ताकि यह स्पष्ट हो जाये कि इस दीन के इस अहमतरीन बुनियाद के बारे में आज किस तरह अधिकतर मुसलमान अज्ञानता का शिकार हो चुके हैं यहां तक कि उन्होंने अल्लाह की इबादत में दूसरों को शरीक ठेहरा लिया है और अल्लाह के विशेषाधिकार में अल्लाह के अलावा को शामिल कर लिया है।

हमारे ईमान की एक खूबी यह भी है कि हम अल्लाह को इस संसार का पालनहार और स्वामी समझें। अल्लाह अपने ज्ञान और शक्ति के आधार पर जिस तरह चाहता है स्वयं सभी मामलों और तमाम संसार का स्वामी है, उसके अलावा कोई पालनहार नहीं है। उसने अपने बन्दों को दुनिया और परलय में कामयाब बनाने और सफलता की राह दिखाने के लिये अपने रसूल (सन्देशवाहक) भेजे और किताबें भेजीं, इन सब कामों में अल्लाह का कोई सहायक और साझीदार नहीं है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह हर चीज़ पर खूब निगेहबान है''। (सूरे ज़ुमर सूरे न० ३९ आयत न० ६२)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने सब आसमानों और ज़मीन को छः रोज़ में पैदा किया है फिर अर्श पर काइम हुआ वह शब (रात) से दिन को ऐसे छुपा देता है कि वह रात उस दिन को जल्दी से आ लेती है और सूरज और चांद और दूसरे सितारों को पैदा कया ऐसे तौर पर कि सब उसके हुक्म के पाबन्द हैं, याद रखो अल्लाह ही के लिये ख़ास है खालिक़ होना और हाकिम होना, बड़ी खूबियों से भरा हुआ है अल्लाह जो तमाम संसार का परवरदिगार है''। (सूरे शूरा, सूरे न० ७ आयत न० ५४)

अल्लाह पर ईमान लाने के अर्थ में यह बात भी शामिल है कि अल्लाह के तमाम अच्छे नामों और जिन खूबियों का कुरआन में उल्लेख है और जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से साबित है उन पर बिना कमी और ज्यादती के ईमान लाया जाए यह हम लोगों पर अनिवार्य है।

फरिश्तों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि इनको अल्लाह ने अपनी फरमाबरदारी के लिये पैदा किया है अल्लाह ने फरिश्तों की खूबी यह बताई है कि वह नेक बन्दे हैं वह किसी बात में अल्लाह के हुक्म का इन्कार नहीं करते बल्कि हमेशा अल्लाह के हुक्म की पाबन्दी करते हैं।

क़ज़ा व क़द्र पर ईमान लाने

का अर्थ यह है कि जो कुछ हो चुका है और जो कुछ होने वाला है अल्लाह को इसका ज्ञान है और अल्लाह तआला अपने बन्दों के सभी अहवाल को खूब अच्छी तरह जानता है। बन्दों के रिज़्क़, उनकी उम्र उनके सभी कर्म का पूर्ण ज्ञान है। अल्लाह से कोई भी चीज़ छुपी हुई नहीं है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जानता है'' सूरे तौबा आयत न० ११५

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''यकीनन हमें इल्म है जो कुछ जमीन उनमें से कम करती है और हमारे पास एक किताब (हर चीज़) की हिफ़ाज़त करने वाली है'' (सूरे क़ाफ़-आयत न०-४)

कुरआन में फरमायाः

''और हमने हर चीज़ को स्पष्ट किताब में सुरक्षित कर रखा है'' (सूरे यासीन-आयत न०-१२)

फरमायाः ''क्या आप नहीं जानते कि बेशक अल्लाह ही जानता है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है। निसन्देह यह (सब कुछ) किताब (लौहे महफूज़) में (दर्ज) है, बेशक यह अल्लाह पर बिल्कुल आसान है। (सूरे हज आयत न० ७० सूरे न०२२)

अल्लाह की इन तमाम खूबियों पर ईमान लाना हमारी आस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा और अनिवार्य है।

मासिक इसलाहे समाज

स्वामित्व का एलान

फार्म न० ४ रूल न० १

नाम पत्रिका	:	इसलाहे समाज
अवधिकता	:	मासिक
प्रकाशन स्थान	:	अहले हदीस मंजिल ४११६, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-६
मुद्रक व प्रकाशक	:	मुहम्मद इरफान शाकिर
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सी-१२५/२ अबुल फज़ल इन्कलेव-२ शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली२५
सम्पादक	:	एहसानुल हक
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	अहले हदीस मंजिल ४११६, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-६
स्वामित्व	:	मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द ४११६ उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-६

मैं मुहम्मद इरफान शाकिर, मुद्रक व प्रकाशक तस्दीक करता हूं कि उपर्युक्त बातें मेरे ज्ञान के अनुसार सहीह हैं।

हस्ताक्षर

प्रकाशक एवं मुद्रक

मुहम्मद इरफान शाकिर

बड़ा शिर्क

मौलाना कमालुददीन असरी

सवालः- अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे बड़ा गुनाह क्या है?

जवाबः- अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना सबसे बड़ा गुनाह है।

फरमाने बारी तआला हैः ''हज़रत लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए फरमाया था कि ऐ मेरे बेटे अल्लाह के साथ शिर्क मत करो यकीन मान लो कि शिर्क बहुत बड़ा गुनाह है।'' (सूरह लुक़मान)

और जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया गया कि सबसे बड़ा गुनाह क्या है? तो आपने फरमाया ''तुम्हारा अल्लाह के साथ शरीक और साझी ठहराना इसके बावजूद कि उसने तुम को पैदा किया'' (बुखारी व मुस्लिम)

सवालः बड़ा शिर्क किसे कहते हैं?

जवाबः ग़ैरूल्लाह की इबादत करना बड़ा शिर्क है। जैसे गैरूल्लाह को पुकारना और उनसे मुरादें मांगना या ज़िन्दा गायब लोगों से इस्तिग़ासा करना उनसे मदद तलब करना और मुसीबत के समय उनसे फरियाद करना। इरशादे बारी हैः ''अल्लाह की इबादत करो और किसी को उसका शरीक न बनाओ'' (सूरह निसा)

और फरमाने रसूल हैः ''गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ शिर्क करना है''। (बुखारी)

सवालः- कया इस उम्मत में शिर्क मौजूद है।

जवाबः- हाँ, इस उम्मत में शिर्क मौजूद है।

फरमाने बारी तआला है ''इन में अक्सर लोग अल्लाह पर ईमान नहीं रखते बल्कि वह मुश्रिक हैं''। (सूरह यूसुफ)

सवालः- मुर्दे या ज़िन्दा ग़ायब लोगों को पुकारने का हुक्म क्या है?

जवाबः- मुर्दों या ज़िन्दा ग़ायब लोगों को पुकारना बड़ा शिर्क है।

अल्लाह तआला का इरशाद है ''अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों को मत पुकारो जो तुम्हें नफ़ा व नुक़सान नहीं पहुंचा सकती और अगर तुमने यह काम किया तो बिला शुबहा तुम फौरन ज़ालिमों और मुश्रिकों में से हो जाओगे। (सूरह यूनुस)

और फरमाने रसूल है ''जो शख्स अल्लाह के सिवा किसी शरीक को पुकारने की हालत में मर जाए तो वह जहन्नम की आग में दाखिल होगा। (बुखारी)

सवालः क्या दुआ इबादत है?

जवाबः हाँ दुआ इबादत है।

इरशदे बारी तआला है ''तुम्हारे रब का फरमान है तुम मुझे पुकारो यानी मुझ से दुआ मांगो मैं तुम्हारी पुकार सुनूंगा यानी तुम्हारी दुआ कुबूल करूंगा बेशक वह लोग जो मेरी इबादत से सरताबी करते हैं जल्द ही वह ज़िल्लत के साथ जहन्नम में दाखिल होंगे''। (सूरे गाफिर)

और फरमाने रसूल है ''दुआ ही इबादत है। (अहमद, तिर्मिज़ी)

सवालः क्या मुर्दे दुआ और पुकार सुनते हैं?

बाक़ी पृष्ठ २१ पर

गुनाह से दीन व दुनिया की बर्कतों में कमी

अल्लामा इब्ने कैइम रह०

गुनाहों की एक सज़ा यह भी है कि उमर, रिज़्क़, ज्ञान, कर्म फरमांबरदारी और इबादत की बर्कतें छिन जाती हैं दीन व दुनिया की खैर व बर्कत गुनेहगार से छीन ली जाती है। नाफरमान बन्दे को आप सबसे ज़्यादा बे खैर बे बरकत पायेंगे। न उसकी आयु में बर्कत होगी न उसके दीन व दुनिया के किसी काम में।

हक़ीक़त तो यह है कि सृष्टि के गुनाहों की वजह से जमीन की बर्कतें छीन ली जाती हैं। करुआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''और अगर इन बस्तियों के रहने वाले ईमान लाते और परहेज़गारी अपनाते तो हम आसमान व ज़मीन की बर्कतों का दर्वाज़ा उनके लिये खोल देते।'' (सूरे आराफ आयत न०-९६)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः ''और अगर यह लोग सीधे रास्ते पर काइम रहते तो हम उन्हें पानी की रेल पेल से सैराब करते ताकि बरसात की नेमत में हम उनका परीक्षा करें'' (सूरे जिन्न आयत १६-१७)

गुनाह करने से बन्दे को रिज़्क व रोज़ी से वंचित कर दिया जाता है। हदीस शरीफ में हैः रूहुल कुद्स (जिब्राईल अलैहिस्सलाम) ने मेरे दिल में यह बात डाली कि कोई इन्सान उस वक़्त तक नहीं मरे गा जब तक कि वह अपनी रोज़ी पूरी न कर ले पस तुम अल्लाह तआला से डरते रहो और अच्छे तरीक़े से उससे मांगो, क्योंकि अल्लाह तआला से जो कुछ मिल सकता है, उसकी फरमांबरदारी से ही मिल सकता है और अल्लाह अतआला ने करूणा, प्रसन्नता अपनी खुशी और यक़ीन में रखी है। शक़ और नाराज़गी में दुख और ग़म के सिवा कुछ नहीं। (सुनन इब्ने माजा, हसन सहीह)

हक़ीक़त यह है कि रिज़्क़ व अमल का विस्तार उसकी अधिकता की वजह से नहीं है, उमर में ज़्यादती, महीनों और बर्सों की अधिकता की वजह से नहीं बल्कि रोज़ी और उमर में बढ़ोतरी यह है कि उमर और रोज़ी में बर्कत हो।

इन्सान की जिन्दगी तो उसी वक्त है जब उसका दिल और रूह जिन्दा हो और दिल की जिन्दगी उस वक़्त है जब वह अपने लिये अल्लाह का ज्ञान हासिल कर ले, अल्लाह से मुहब्बत करे उसकी इबादत करे, उसी की चौखट पर सर झुकाए उसी के ज़िक्र से सुकून और उसकी समीपता से भलाई हासिल करे जिसने यह जिन्दगी खो दी, उसने हर प्रकार की भलाई खो दी, चाहे उसे कुछ दुनिया मिल गई हो लेकिन इस ज़िन्दगी के बदले सारी दुनिया भी मिल जाए तो भी कम है। बन्दा जिस चीज़ को भी खो बैठे उसका बदल मुमकिन है लेकिन अल्लाह को खो बैठने का कोई बदल नहीं है। अल्लाह की बर्कत को कोई चीज़ रोक नहीं सकती हर वह चीज़ जो अल्लाह के सिवा किसी और के लिये हो उससे बर्कत छीन ली जाती है क्योंकि बर्कत तो अल्लाह की बारगाह से उतरती है, सारी बरकतें वहीं से आती हैं। इन्सान के लिये केवल वही चीज़ लाभदायक और कारामद होगी जो अल्लाह की बन्दगी में सर्फ की जाए। यही वजह है कि बाज़ लोगों के पास सोने चांदी के अंबार होते हैं और माल व दौलत से उनके ख़ज़ाने भरे होते हैं। लेकिन हकीक़त में इसमें से एक हज़ार दिरहम भी उनकी क़िस्मत में नहीं होती जो चीज़ अल्लाह के लिये हो उसी में अल्लाह तआला की भलाई और बर्कत होती है।

इन्सान और रास्तबाज़ी

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

कुरआन का एक क्रांतिकारी सिद्धांत यह है

''ऐ ईमान वालो! तुम इन्तेहाई मज़बूती और पोख्तगी से काइम रहने वाले और अल्लाह के लिये सच्ची गवाही देने वाले हो जाओ कि अगर वह गवाही खुद तुम्हारे खिलाफ या तुम्हारे मां बाप और क़राबतदारों के भी खिलाफ हो तो हरगिज़ न झिझको। अगर कोई मालदार या मुफिलस है तो अल्लाह तुम से ज़्यादा उन पर मेहरबानी रखने वाला है ऐसा न हो कि हवाए नफस की पैरवी तुम्हें इन्साफ से बाज़ रखे। अगर तुम (गवाही देते वक़्त) बात को घुमा फिरा कर पेश करो गे या गवाही देने से पहलू बचा जाओगे तो (याद रखो) अल्लाह तुम्हारे कामों से पूरी तरह आगाह है''। (सूरे निसा-३५)

इन्सान के लिये एक महत्वपूर्ण मरहला यह है कि वह हर हाल में सच पर क़ाइम और बाकी रहे और सच्ची गवाही देने में ज़रा भी पसो पेश न करे, अगर्चे सच बोलने से खुद उसे या उसके मां बाप और करीबतदारों (रिश्तेदारों) को नुकसान पहुंचे। अल्लाह तआला फरमाता है कि कोई मालदार हो या गरीब अल्लाह तआला की मेहरबानी उनके लिये गवाही देने वाले से कहीं ज़्यादा फायदेमन्द और नफा बख्श होगी। मतलब यह है कि इन्साफ के मामले में अपने मन की पैरवी हर्गिज़ न की जाए। यह भी नहीं कि बयान में हेर फेर का तरीक़ा अपनाया जाए या गवाही न देने ही से बचने को पनाहगाह बना लिया जाए। इस तरह इन्सानों को चकमा दिया जा सकता है लेकिन अल्लाह तआला तो दिलों और निय्यतों के भेद भी जानता है।

जो लोग अपने खिलाफ या अपने अत्यंत करीबी रिश्तेदारों के खिलाफ भी सच कहते हुए न झिझकें वह सृष्टि की भलाई और सफलता के लिये बहुमूल्य काम अंजाम दे सकते हैं, इसकी तवक्को (आशा) ऐसे लोगों से क्यों कर रखी जा सकती है जो एक शब्द जुबान से निकालते वक़्त दस बार सोचते हैं कि इससे हमारे हम खयालों पर तो ज़ोर न पड़ेगी और हमारे विरोधी तो फायदा न उठा लेंगे इनका नाम उनके यहाँ ''सियासतदानी'' और ''तदब्बुर'' है। विश्व शान्ति के ज़ामिन वही हो सकते हैं जो हक़ व इन्साफ के मामले में ईमानदारी के इस अत्यंत बुलन्द मर्तबे पर विराजमान हों।

बुराई के जवाब में भलाई

कुरआन मजीद का क्रांतिकारी सिद्धांत यह है ''और नेकी और बदी (बुराई) बराबर नहीं (बदी) को इस तरीक़े से दूर कर जो अच्छा है (यानी नेकी के ज़रिये से) फिर तुम देखोगे कि तुम्हारे और जिस शख्स के दर्मियान दुश्मनी है वह तुम्हारा गर्म जोश दोस्त बन जाएगा''। (सूरे हामीम सजदा-३४)

कुरआन मजीद के एक और व्यापक इंकेलाबी निमंत्रण पर गौर फरमाइये। अल्लाह तआला फरमाता है।

''अल्लाह हुक्म देता है कि (हर मामले में) इन्साफ करो सब के साथ भलाई से पेश आओ, करीबतदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो, और वह तुम्हें रोकता है बेहयाई की बातों

बाक़ी पृष्ठ २१ पर

(प्रेस विज्ञप्ति)

हमारे जवान देश की सीमाओं की हिफाज़त के लिये पूरी तरह सक्षम

दिल्ली २८ फरवरी २०१९

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर (अध्यक्ष) मौलाना असग़री अली इमाम महदी सलफी ने अख़बार के नाम जारी एक बयान में पुलवामा के जवानों के खून का बदला लेने के लिये पड़ोसी देश में आतंकवादियों के अड्डों पर कामयाब हमले की कार्रवाई की सराहना की है और कहा कि हमारे जवान अपने देश की सीमाओं की हिफाज़त करने के लिए पूरी तरह सक्षम हैं और वह दुश्मन की किसी भी कार्रवाई का मुंह तोड़ जवाब दे सकते हैं यह बात किसी से ढ़की छिपी नहीं है और दुश्मन इसको कई बार देख चुका है।

सम्माननीय अमीर ने कहा कि चूंकि जंग किसी समस्या का समाधान नहीं है इससे इन्सानी जान व माल की बड़े पैमाने पर तबाही व बर्बादी होती है और ख़तरनाक परिणाम निकलते हैं जिससे जितना भी संभव हो बचना चाहिए लेकिन तंग आयद बजंग आयद के अनुसार हमारे जवानों ने अत्यंत सब्र से काम लिया और जब दुश्मन ने मजबूर किया तो इंतेकाम लेने में किसी भी प्रकार की कमजोरी नहीं दिखाई बल्कि साबित कर दिया कि देश के जाँबाज़ जवान जो हर प्रकार के आधुनिक हथियार से सशस्त्र हैं और बड़ी शक्ति एवं मनोबल रखते हैं, वह आवश्यकता पड़ने पर दुश्मन को अच्छी तरह सबक़ सिखाना भी जानते हैं जिस पर हमें गर्व है। हम यह बात भी बता देना आवश्यक समझते हैं कि पड़ोसियों को भी अच्छा आचरण अदा करना चाहिए और हमारे सब्र व सहन को किसी भी प्रकार की कमज़ोरी नहीं समझनी चाहिए क्योंकि भारत देश अहिंसा पर विश्वास रखने के बावजूद बड़ी सी बड़ी शक्ति को मुंहतोड़ जवाब देने की शक्ति एवं क्षमता रखता है और किसी भी वक़्त उसका सब्र व सहन खत्म हो सकता है जैसा कि पिछले कल हमारी वायु सेना ने दुश्मन के ठिकानों को ध्वस्त व मलियामेट करके रख दिया। हिन्दुस्तान के अवाम चाहे वह कश्मीरी हों या गैर कश्मीरी इस प्रकार की कार्रवाइयों को गर्व की निगाह से देखना चाहिए और हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि शान्तिपूर्ण और कश्मीर के अवाम जो खालिस हिन्दुस्तानी शहरी हैं वह पुलवामा जैसे आतंकी हमले के बाद गलत फहमी में बगैर छान बीन किए किसी प्रकार के हिंसा का शिकार न बन पाएं, इस का संबन्धित प्रशासन और साधारण देशवासियों को विशेष ख्याल रखना चाहिए।

सम्माननीय अमीर ने अपने बयान को जारी रखते हुए कहा कि यह हक़ीक़त हमारी नज़रों से किसी भी हाल में ओझल नहीं होनी चाहिए कि दोनों देशों के अवाम भाई भाई हैं और वह प्यार व मोहब्बत के साथ एक अच्छे पड़ोसी की तरह रहना चाहते हैं। वह जंग और लड़ाई को सख़्त नापसन्द करते हैं क्योंकि यही बात सबके हित में है और इसी से दोनों देशों के विकास की संभावनाएं उज्जवल होंगी एवं अपनी शक्ति को नकारात्मक मामलों में ख़र्च करने के

बजाए सकारात्मक अंदाज़ में प्रयोग करके समृद्धि की ज़मानत प्राप्त हो गी और किसी तीसरी ताक़त जो लड़ाओ और कमाओ की राजनीति करती है इसका अवसर मिले इससे भी बचे रहेंगे।

सम्माननीय अमीर ने सभी देशवासियों से अपील की कि बिल्कुल संयम रहें, अच्छे और शान्ति पूर्ण शहरी और देश प्रेमी होने का सुबूत उपलब्ध करते रहें। किसी प्रकार के प्रोपैगण्डे और बदगुमानी का शिकार न हों और न ही किसी अफवाह से प्रभावित हो कर किसी तरह की अफरातफरी और अशान्ति का हिस्सा बनने से अपने आप को भी और दूसरों को भी महफूज़ रखने की कोशिश करें क्योंकि ऐसे अवसर पर जहां और ज़्यादा एकता, संगठित और आपस में सहयोग करने से अन्दुरूनी तौर पर इन्सान मज़बूत होता है वहीं पर विभिन्न प्रकार की अफवाहों और प्रोपैगण्डों का बाज़ार भी गर्म होता रहता है जो किसी भी तरह से देश वासियों और देश व अवाम के हक़ में लाभकारी नहीं होता।

जारी कर्ता

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

बाक़ी पृष्ठ १७ का

जवाबः मुर्दे किसी की दुआ और पुकार नहीं सुनते। इरशादे बारी तआला है ''बेशक तुम दुआ और पुकार न मुर्दों को सुना सकते हो और न बहरों को जबकि वह पीठ फेर कर चले जाते हैं।'' (सूरह नमल)

दूसरी जगह पर इरशाद फरमायाः ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते बेशक अल्लाह जिसे चाहता है सुना देता है और तुम क़ब्र के अन्दर के लोगों को नहीं सुना सकते।

सवालः- क्या अल्लाह मुर्दों को कुछ सुना सकता हैं?

जवाबः- हदीसों से साबित होता है कि मुर्दे क़ब्र में सुन सकते हैं। अल्लाह तआला जब चाहे उन्हें सुना सकता है प्यारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है तो वह उनके क़दमों की आवाज़ सुनता है। (बुखारी व मुस्लिम)

ऊपर ज़िक्र की गयी हदीसों से मालूम होता है कि मुर्दे कब्र में सुन सकते हैं अलबत्ता जवाब देने या फरियाद सुनने और मुराद पूरी करने से आजिज़ हैं।

बाक़ी पृष्ठ १६ का

से, हर तरह की बुराइयों से और जुल्म व ज़्यदती के कामों से, वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि (समझो) और नसीहत पकड़ो'' (सूरे नहल-१०)

अल्लाह का फरमान मुसलमानों के लिये यह है कि न्याय को अपनी आदत बनाओ, अच्छे आचरण में सक्रिय रहो, रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो। गलत कामों से बचो, हर तरह की बुराइयों से परहेज़ करो, जुल्म व ज्यादती से कभी आलूदह न हो (जुल्म व ज़्यादती से दूर रहो)

अद्ल न्याय तमाम अच्छे कर्मों की जड़ है जिस इन्सान के अन्दर यह बात पैदा हो गई कि जो बात करनी चाहिए इन्साफ के साथ करनी चाहिए उसने सब कुछ पा लिया एहसान का अर्थ यहाँ अच्छा कर्म है जो बात करो, अच्छाई की करो, नेकी और भलाई की करो, कर्म की बुनियाद भलाई हो बुराई न हो। जो हम से करीब का रिश्ता रखते हैं वह हमारे अच्छे व्यवहार के ज़्यादा हक़दार हैं। (रसूले रहमत -७६३-७६५)

एलाने दाख़िला

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था

अलमाहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामी में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन शनिवार 15 जून से सोमवार 17 जून 2019 तक लिया जायेगा। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें। आवेदन पत्र मिलने की आखिरी तारीख 9 जून 2019 है।

नोटः- हर क्षात्र को हर महीने वज़ीफा दिया जायेगा।

अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव

जामिया नगर, ओखला, दिल्ली-110025

फोन 011-26946205 , 011-23273407

Mob. 9213172981, 09560841844

शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

अमीरे मोहतरम की अबू ज़हबी कांफ्रेन्स में शिर्कत और अपने प्रस्ताव के द्वारा आतंकवाद व दाइश की निन्दा

अल्लाह तआला जो पूरे संसार का पालनहार और मालिक है उसने इन्सानों को सृष्टि में श्रेष्ठतम दर्जा दिया। सभी इन्सान एक ही माँ बाप की औलाद हैं उनके बीच भाई चारे का रिश्ता क़ाइम है उसने अपनी बन्दगी के लिये पैदा किया और आपसी परिचय के लिये कौमों और कबीलों की लड़ी में पिरो दिया। उसने प्यार व मुहब्बत से रहने और नफरतों से दूर रहने का उपदेश एवं आदेश दिया। लेकिन मौजूदा दौर में इन्सान इन्सान का दुश्मन बना हुआ है और पूरी मानवता जख़्मों से चूर है। कत्ल व खंरेज़ी, फितना व फसाद चरम पर है।

खादिमे हरमैन शरीफैन शाह अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज आल सऊद रह० जो अत्यंत दूर दर्शी और वर्तमान हालात पर उनकी गहरी नज़र थी वह मुसलमानों और इस्लाम जगत के अत्यंत बुद्धिमान शासक थे। उन्हें यह बात भली भांति मालूम थी कि मौजूदा दौर में अन्तरधार्मीय वार्ता और विचार विनयम का दरवाज़ा खोल कर गलत फहमियों को दूर करके मानवता खास तौर से मुसलमानों के खिलाफ तेज़ व तुन्द आंधियों पर काबू पाया जा सकता है और मानवता को हेलाकत खेज़ियों से छुटकारा दिलाया जा सकता है। उन्होंने इसका प्रारूप तैयार किया और इसका व्यवहारिक उपाय किया फिर अन्तर धर्मीय डायलाग का सिलसिला चल पड़ा और विश्व स्तर पर इसके सकारात्मक प्रभाव नज़र आने लगे। जगह जगह इस प्रकार के प्रोग्राम और कांफ्रेन्सें होने लगीं और आपसी गलत फहमियों के निवारण का रास्ता प्रशस्त हो गया।

मर्कज़ी जीमअत अहले हदीस हिन्द के पलेट फार्म से भी इस तरह के प्रयास बराबर होते रहे और विभिन्न अवसरों पर सभी संगठनों और अधिकांश धर्मों के मार्गदर्शकों को जमा करके भाई चारे की मिसाल काइम की गई और दूसरों को करीब से देखने और समझने का मौक़ा उपलब्ध किया। मौजूदा दौर में इन्सानों के बीच में नफरत, नाबराबरी, अत्याचार व हिंसा और आतंकवाद के अन्त के लिये निरन्तर प्रयास होते रहे। मानवता की बक़ा एवं संरक्षण के लिये उसके प्रयास न केवल आदर्शपूर्ण और काबिले क़द्र हैं बल्कि इसका एतराफ बिना भेदभाव विचार धारा और धर्म के सभी ने किया है।

शैखुल अज़हर डा० अहमद अत-तैयब जो मज्लिस हुका-माउल मुस्लिमीन के अध्यक्ष भी हैं, के संरक्षण में इस प्रकार की कई कांफ्रेन्सें आयोजित हुईं जिन में दुनिया के प्रतिष्ठित ओलमा-ए-किराम और बुद्धिजीवियों ने शिर्कत की और मानवता के ज्वलंत मुददों पर विस्तृत चर्चा हुई। पिछले ३-५ फरवरी २०१९ को मुत्तहदा अरब अमारात के शासक सम्माननीय खलीफा बिन ज़ायद आल नहयान और दुबई के हाकिम सम्मानीय शैख मुहम्मद बिन राशिद आल मकतूम के सहयोग और मज्लिस हुकमा माउल मुस्लिमीन के द्वारा अबू ज़हबी में अल मोतमर अलआलमी लि उखुव्वतिल आलमिया (भाई चारा पर विश्व-कांफ्रेन्स) के नाम से एक विश्व-कांफ्रेन्स हुई जिसमें खास तौर पर डा० अहमद अत- तैयब शैखुल अज़हर इमामे अकबर मिस्र और ईसाई जगत के महान धार्मिक मार्गदर्शन पोप फ्रांसेस शरीक हुए। इनके अलावा पूरी दुनिया से ओलमा, चिंतक, धर्मगुरू, धार्मिक गुरू, संगठनों, जमाअतों के प्रतिनिधि

ायों ने शिर्कत की। हिन्दुस्तान से भी हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई जैनी आदि सभी धर्मों के और मजहबी पेशवा कांफ्रेन्स में शामिल हुए। इस कांफ्रेन्स में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के सम्माननीय अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने विशेष तौर पर शिर्कत की और उन्होंने इस अवसर पर प्रतिष्ठित वैश्विक धार्मिक रहनुमाओं से मुलाकात की और विभिन्न विषयों पर विचार-विनयम किया और अपने प्रस्ताव के द्वारा दाइश और आतंकवाद की कड़े शब्दों में निन्दा की।

यह भव्य कांफ्रेन्स अत्यंत भाई चारा और शिष्टाचार व दोस्ताना माहौल में आयोजित हुई और इसमें वर्तमान दुनिया की खुशी व ग़मी, समस्याएं व कठिनाइयां विकास एवं पतन, शांति, अशांति, गरीबी, समाजी व सियासी जब्र व जुल्म नाबराबरी, नैतिक पतन, आतंकवाद, अतिवाद नसली व मज़हबी नफरत तमाम विषयों पर चर्चा हुई और कांफ्रेन्स के समापन पर एक संयुक्त बयान वसीकतुल इखवतिल इस्लामिया मिन अजलिास्सलमिल आलमी वल ऐशिल मुश्तरक (विश्व सुरक्षा और सह अस्तित्व के लिये इन्सानी भाई चारे की दस्तावेज़) के शीर्षक से जारी किया गया। पूरी आशा है कि इन्सानी भाई चारा को मज़बूत करने और आपस में लड़ाई पर आमादा दुनिया में अम्न व शान्ति का वातावरण स्थापित करने, आपसी नफरत दुश्मनी और आतंकवाद जैसे घातक एवं हानिकारक रोगों से मानवता को छुटकारा दिलाने में कांफ्रेन्स स्पष्ट भूमिका निभाए गी। अल्लाह करे यह अपने नेक मकसद में कामयाब साबित हो और अल्लाह ही क्षमता देने वाला और सीधे रास्ते की तरफ मार्गदर्शन करने वाला है। (जरीदा तर्जुमान-१६-२८ फरवरी २०१९)

❑ ❑ ❑

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

इस्लाम में जानवरों के साथ सद्व्यवहार

❑ **मुहम्मद गुफरान सलफी**

इस्लाम एक दयावान धर्म है इसकी करूणा मनुष्यों तक ही सीमित नहीं बल्कि प्रत्येक जीवधारी को सम्मिलित है। इसकी शीतल छाया में न केवल मानव संसार को अपने बीच दया करने का आदेश दिया बल्कि समस्त जीवधारियों के साथ भी दया का आग्रह किया है एवं उन्हें किसी प्रकार का कष्ट देने से सख्ती के साथ रोका है।

इस्लाम से पूर्व अरब समाज पशुओं पर भिन्न भिन्न प्रकार से अत्याचार करते थे। उनके यहां पशुओं को अन्धा धुंध मारना एवं उन्हें बांध ाकर निशाना लगाना साधारण बात थी इसी प्रकार मांस खाने के लिए जीवित पशु के शरीर से मांस काट लिया करते। इसके अतिरिक्त पशुओं पर निशाना लगाने की प्रतियोगिताएं भी होती थीं। इसी प्रकार यदि कोई मर जाता तो उसकी सवारी को उसकी कबर पर बांध देते और उसका खाना पानी बन्द कर देते जिसके कारण वह सूख कर मर जाता। परन्तु इस्लाम आया तो उसने पूर्व के समस्त अत्याचारों और दुष्कर्मों पर प्रतिबंध लगा दिया और पशुओं के साथ सदव्यहार करने का आदेश दिया इतना ही नहीं बल्कि उनके साथ सवव्यवाहर करने पर पुण्य की खुशखबरी भी सुनाई जैसा कि नबी स०अ०व० से पूछा गया कि क्या जानवरों के साथ सदव्यवहार करने पर हमारे लिए पुण्य है? तो आप स०अ०व० ने कहा प्रत्येक जीवधारी के साथ सदव्यवहार करने में पुण्य है। (बुखारी ६००८)

इस्लाम ने पशुओं के संग सदव्यवहार की जो शिक्षाएं दी हैं और जिन अधिकारों का वर्णन किया है उनमें से कुछ आदेशों को आपके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. पशुओं पर अत्याचार न किया जायेः इस्लाम ने पशुओं को भी सुख के साथ जीवन यापन करने का अधिकार दिया है जैसा कि इस्लाम की शिक्षा है कि ''न नुकसान उठाओ न नुकसान पहुंचाओ'' (इब्ने माजा-४०) दूसरों को कष्ट देना इस्लाम धर्म में हराम है।

२. पशुओं के सुख दुख का ध्यान रखा जायेः जिन पशुओं से हम सेवा लेते हैं और लाभ उठाते हैं उनसे सम्बंधित इस्लाम की शिक्षा यह है कि उनके सुख दुख का ध्यान रखा जाये उन्हें निश्चित समय पर चारा पानी दिया जाये। अल्लाह तआला कहता है ''तुम खुद खाओ और अपने चौपायों को भी चराओ, कुछ शक़ नहीं कि इसमें अकलमंदों के लिए बहुत सी निशानियां हैं''। (सूरह ताहा ५४)

सख्त कार्य न लिया जाये, उनके रहन सहन की उपयुक्त व्यवस्था की जाये, उनके सहन के अनुसार ही उनसे कार्य कराया जाये। नबी स०अ०व० ने कहा कि ''अगर तुम हरियाली वाले एलाकों से यात्रा करो तो अपनी सवारी को धीरे चलाओ और जानवर को उस हरियाली से लाभ उठाने का अवसर दो और यदि मौसम सूखा हो तो तेज गति से चलाओ ताकि वह अपने स्थान पर जल्दी पहुचें और उन्हें खाने पीने के साथ आराम का अवसर मिले''। (अबू दावूद ३५६९)

रसूल स०अ०व० ने फरमाया

कि यदि किसी ने पक्षी या उससे भी छोटे किसी जीवधारी को बेवजह हत्या की तो अल्लाह के यहां इससे सम्बंधित पूछ ताछ होगी।

जीवित पशुओं का न तो मांस काट कर खाया जाये और न ही उनका कोई अंग काटा जाये नबी स०अ०व० ने ऐसा करने वालों को शाप दिया है जैसा कि इब्ने उमर रजि० कहते हैं कि नबी स०अ०व० ने उस मनुष्य को शाप दिया है जो जीवित पशु का कोई अंश काट दे। (बुखारी ५५१५)

और नबी स०अ०व० ने उस काटे गये अंग को मुरदार और हराम बताते हुए कहा कि जीवित पशु का काटा गया कोई भी अंग मुरदार है। जीव जन्तुओं पर निशाना बाज़ी न किया जाये, पशुओं को निशाना बाज़ी के लिये प्रयोग करने अथवा बांध कर हत्या करने पर इस्लाम ने कठोरता से प्रतिबंध लगाया है। रसूल स०अव० ने फरमाया कि तुम किसी भी प्राणी जीवधारी को कभी भी अपना निशाना न बनाओ। (मुस्लिम ५०५९)

रसूल स०अ०व० ने पशुओं को बांध कर हत्या करने से रोका है किसी भी जीवधारी प्राणी को आग में न जलाया जाये। इस्लाम ने किसी भी जीव जन्तु को आग की सजा देने से मना किया है और अल्लाह के अतिरिक्त किसी भी मनुष्य को इसका अधिकार नहीं दिया है। रूसल स०अ०व० ने कहा कि किसी जीवधारी को आग का दण्ड (सजा) देने का अधिकार केवल अल्लाह तआला ही को है। (बुखारी ३०१६)

पशुओं एवं पंक्षियों को आपस में न लड़ाया जाये। इस्लाम ने पशुओं एवं पक्षियों को आपस में लड़ाने से मना किया है और इस प्रकार के खेलों को अपराध और हराम घोषित किया है क्योंकि इसके कारण वह घायल होकर कष्ट उठाते हैं। एक मुरसल रिवायत है कि रसूल स०अ०व० ने जीव जन्तुओं को आपस में लड़ाने से मना किया है (अबू दाऊद २५६१) गैर हानिकारक जीव जन्तुओं को न मारा जाये जिन पशुओं से हानि का भय न हो एवं वह दरिन्दे न हों तो उनकी हत्या करना इस्लाम धर्म में हराम है।

यही कारण है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चींटी, हुदहुद, एवं मधुमख्खी के मारने पर प्रतिबंध लगा दिया। (अबू दावूद ५२६७)

इस्लाम ने केवल उन्हीं जीव जन्तुओं को मारने की अनुमति दी जो मानव जाति के लिये हानिकारक हों और इसका उद्देश्य केवल मानव जीवन का संरक्षण है। रसूल स०अ०व० ने फरमायाः पांच प्रकार के जीव जन्तु ऐसे हैं जिनको मारने की अनुमति हरम की सीमा में भी है सांप बिच्छु, चील, चूहा और पागल कुत्ता। ताकि मानव का जीवन सुरक्षित रहे। लेकिन आकारण उनको सताने पर कड़ी सज़ा की चेतावनी भी दी है।

ये थे इस्लमा में जीव जन्तुआ और पशुओं पंक्षियों के साथ सद्व्यवहार करने की शिक्षाएं जिससे यह सत्यता स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम पशुओं को किस प्रकार दया की दृष्टि से देखता है। आज के समय में आवश्यकता इस बात की है कि इस्लाम की पवित्र शिक्षाओं एवं उसके उज्जवल दर्पण को संसार के सामने रखा जाये ताकि वह इन शान्तिपूर्ण शिक्षाओं का अवलोकन करके इस्लाम धर्म की सत्यता एवं दयालुता को स्वीकार करें। अल्लाह हमें ऐसा करने की शक्ति प्रदान करे। आमीन

❑ ❑ ❑

तरहीब तुकबन्दी की शक्ल में

सऊदी अरब के सम्माननीय युवराज शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान हफिज़हुल्लाह के हिन्दुस्तान आगमन पर

मरहबा ऐ इब्ने सुलताने अरब, सद मरहबा
मरहबा ऐ फख्रे शुब्बाने अरब, सद मरहबा
मर्कज़े तौहीद व सुन्नत से है आमद आप की
वतने सानी आप का हिन्दुस्ताँ है मर्हबा
ऐ ज़मीने हिन्द, तू है लायक़े इफ्तेख़ार
तू सदा करती है अपने दोस्तों को मरहबा
हर सरे मग़रूर को करती सदा है सरनिगूँ
और सदीक़े हिन्द, इब्ने शाहे सलमाँ मरहबा
हैं बहुत मज़बूत व मुस्तहकम रवाबित "रियाज़" के
मुल्क हिन्दुस्ताँ से है खूब रिश्ता मरहबा
दहशत व वहशत का है माहौल सारे विश्व में
मरकज़े अम्न व अमाँ के पेश्वा, सद मरहबा
सर ज़मीने हिन्द है उलफत मुहब्बत की ज़मीं
मरहबा फखरे अरब सद मरहबा सद मरहबा
हम बहुत मसरूर हैं कि दोस्त मिलने आए हैं
दोस्तों से, दोस्तों के देश में सद मरहबा
दे के दावत हम ने की है दोस्ती का हक़ अदा
मरहबा ऐ मेहमाने जी शर्फ सद मरहबा

(असग़र मेहदी)

शब्द	अर्थ
मरहबा	खुशी, शाबाश, धन्य हो, (प्रशंसा सूचक शब्द)
सद	सौ, अभिप्रायः बहुत खूब
इब्न	पुत्र, बेटा
सुलतान	बादशाह
फख्र	गर्व
शुब्बान	नौजवान
मर्कज	केन्द्र
आमद	आना
सानी	दूसरा
इफ्तेखार	गर्व
मगरूर	घमण्डी
सरनिगूं	पराजित
मुस्तहकम	मज़बूत, स्थिर
श्रवाबित	संबन्ध
दहशत	भय
पेश्वा	रहनुमा, मार्गदर्शक
उलफत	प्रेम
मसरूर	खुश
दावत	आमंत्रण
जीशर्फ	प्रतिष्ठत, सम्माननीय

Posted On 21-22 Every Month
Posted At NDPSO
"Registered with the Registrar of Newspapers for India"

MARCH 2019
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2017 - 2019

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

अहले हदीस कम्पलैक्स और अहले हदीस मंज़िल के दोनों इतिहासिक और महान निमार्ण कार्यों के सिलसिले में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल विभिन्न राज्यों के दौरे पर। इन्शाअल्लाह

जमाअती मित्रों और कौम व मिल्लत के शुभचिंतकों को मालूम है कि अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली और अहले हदीस मंज़िल जामा मस्जिद दिल्ली में दो भव्य तारीखी बिलडिंगों के निमार्ण का काम जारी है। इस सिलसिले में अल हम्दुलिल्लाह अहले हदीस कम्पलैक्स के महान निमार्ण प्रोजेक्ट की दूसरी मंज़िल की ढ़लाई का काम हुआ चाहता है और अहले हदीस मंज़िल में तरमीम और निमार्ण का काम तीसरी मंज़िल तक पहुंच चुका है जो अल्लाह के फज्ल व तौफीक के बाद मुहसिनीने जामअत व जमीअत की सखावत व दानवीरता की देन है। अधिकृत सहयोग के लिये अहबाबे जमाअत सूबाई जमीअतों से तनसीक़ के बाद मस्जिदों में बाजाबता और मुसलसल एलान फरमायें।

जल्द ही मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल आप की खिदमत में हाज़िर हो रहा है। इस महान और तारीखी खैर के काम में अपना भर पूर हिस्सा और रोल अदा करके पुण्य के पात्र बनें।

नोटः- इस सिलसिले में संबन्धित राज्यों के पदधारियों और जिम्मेदारान को सूचना दे दी गयी है।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c 629201058685 (ICICI Bank) Chandni Chowk, Delhi-6
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC 0006292)

ISSN2393-8838
Date of Publishing 19th March Vol. No.30 Issue No.3
MARCH 2019
Rs.10/-

मासिक

इसलाहे समाज

समाज सुधारक पत्रिका

इस्लाम अम्न व शान्ति का ध्वजा वाहक है उसके मानने वाले आपसी प्यार, मुहब्बत और सदभावना पर यक़ीन रखते हैं।

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द

1

(जमाअती खबर)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की सरपरस्ती में हरयाणा में आतंकवाद विरोधी सेमीनार का आयोजन

१३ जनवरी २०१९ रविवार को प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस हरयाणा के द्वारा और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की सरपरस्ती में मसाजिद के इमामों का प्रशिक्षण और आतंकवाद विरोधी सेमीनार आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता सूबे के अमीर डा० ईसा खान अनीस जामई ने की। विशेष अतिथि की हैसियत से मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना हारून सनाबिली ने शिर्क त की। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव ने अपने संबोधन में कहा कि आतंकवाद के लिये इस्लाम में कोई गुंजाइश नहीं, इस्लाम एक शान्ति पसन्द धर्म है और जो आतंकवादी है वह मुसलमान हो ही नहीं सकता। जामिया अबू बक्र सिददीक अल इस्लामिया के डायरेक्टर मौलाना अज़हर मदनी ने सेमीनार को संबोधित करते हुए कहा कि हकीकी प्रचारक मानवता का शुभचिंतक और अम्न व शान्ति का झण्डा वाहक होता है और अम्न व शान्ति की स्थापना और बढ़ावा देना ही उसका लक्ष्य होता है ताकि इन्सान अपने रब की खुशी के लिये उसके प्रति रहमत और भला साबित हो और दुनिया व आख़िरत में सफल हो जाए। इस आतंकवाद विरोधी सेमीनार से संबोधित करने वाले सभी वक्ताओं ने आतंकवाद की कड़े शब्दों में निन्दा की।

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस हिन्द के सचिव मौलाना अब्दुर्रहमान सलफी ने कहा कि सूबाई जमीअत पहले से ज़्यादा ताक़त के साथ बुराइयों के खात्मे के लिये मैदान में उतरना चाहती है, इमाम हज़रात हमारा भरपूर सहयोग और साथ दें।

सेमीनार की अध्यक्षता प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस हरयाणा के अमीर डा० ईसा खान जामई ने की और संचालन के फराइज़ मौलाना मुहम्मद मुश्ताक नदवी ने अंजाम दिये। इस सेमीनार में लगभग सौ इमामों को मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की तरफ से इस्लामी किताबें, तफसीर और सूबाई जमीअत की तरफ से एक कम्बल तोहफे के तौर पर दिया गया। इस सेमिना में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी को भी शरीक होना था लेकिन महत्वपूर्ण जमाअती कामों में व्यस्त होने की वजह से शरीक नहीं हो सके। उन्होंने अपने सन्देश में आतंकवाद विरोधी सेमीनार के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि मर्कज़ी जमीअत ने आतंकवाद के खिलाफ जो अभियान शुरू किया है, मुझे आशा है कि आप लोग आतंकवाद के खिलाफ अभियान में प्रभावी रोल अदा करेंगे। उन्होंने अपने सन्देश में आतंकवाद की कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए इसे वर्तमान दौर का सबसे बड़ा नासूर क़रार दिया और कहा कि इस्लाम अम्न व शान्ति का ध्वजा वाहक है उसके मानने वाले आपसी प्यार, मुहब्बत और सदभावना पर यक़ीन रखते हैं। आतंकवाद का इस्लाम धर्म से कोई संवन्ध नहीं है क्योंकि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता।

मासिक

इसलाहे समाज

मार्च 2019 वर्ष 30 अंक 3

रज्बुल मुरज्जब 1440 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़्क़

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये
❑	टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद

दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट **2035** क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल **4116**, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	आतंकवाद विरोधी सेमीनार	2
2.	अच्छा कर्म	4
3.	सऊदी युवराज मुहम्मद बिन सलमान और उनकी कल्याणकारी सेवाएं	6
4.	औलाद का प्रशिक्षण	8
5.	गुनाह को मिटा देने वाले कर्म	9
6.	रजब के महीने में प्रचलित बिदअत	12
7.	आस्था का महत्व	15
8.	बड़ा शिर्क	17
9.	गुनाह से दीन व दुनिया की बर्कतों में कमी	18
10.	इन्सान और रास्तबाज़ी	19
11.	प्रेस विज्ञप्ति	20
12.	ऐलाने दाखिला	22
13.	अमीरे मोहतरम की अबू ज़हबी कांफ्रेन्स में शिर्कत और आतंकवाद की निंदा	23
14.	इस्लाम में जानवरों के साथ सद्व्यवहार	25
15.	तरहीब	27

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

अच्छा कर्म

नौशाद अहमद

किसी चीज़ को या किसी इन्सान को देख कर प्रभावित हो जाना एक प्राकृतिक बात है यह रूझहान संसार के हर हिस्से में पाया जाता है कोई इन्सान किसी की माल व दौलत को देख कर तो कोई किसी की परस्नाल्टी और नामवरी को देख कर प्रभावित हो जाता है।

लेकिन किसी के अच्छे होने का पैमाना उसकी परस्नाल्टी और माल व दौलत नहीं है बल्कि उसकी नेकी और भलाई है। यह एक ऐसा पैमाना है जो इन्सान को ऐसी पहचान देता है जो उसके लिये एक यादगार बन जाता है और यही पहचान इस संसार के स्वामी को प्रिय है।

सहीह बुखारी में एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो अल्लाह पर और परलय के दिन पर विश्वास रखता है उसे चाहिए कि या तो वह भली बात कहे या खामोश रहे। इसी तरह से एक दूसरी हदीस में है कि तुम में से सबसे बेहतर इन्सान वह है जो अल्लाह से खूब डरता हो।

इस्लाम धर्म का यह व्यापक सिद्धांत है कि हर इन्सान की करनी और कथनी में अन्तर नहीं होना चाहिए, उसका कोई भी कर्म ऐसा ना हो जिससे अल्लाह के किसी बन्दे का दिल दुख्ता हो किसी को कोई तकलीफ पहुंचती हो, उसके कर्म अल्लाह के बताए गये सिद्धांतों के अनुसार हों, उसके हर कर्म से नेकी का प्रदर्शन हो ऐसा न हो कि जुबान से अच्छी बातें कह रहा हो और व्यवहारिक स्तर पर उसका मामला कुछ और हो।

इन्सान की सोच का उसके जीवन पर बड़ा गहरा असर पड़ता है जो इन्सान सकारात्मक तरीके से सोचेगा, दूसरों के लिये कल्याण और शुभचिंतन की भावना रखेगा वह निसन्देह अच्छे इंसानों में गिना जाएगा। इसके विपरीत जो इन्सान नकारात्मक सोच रखेगा लोगों के साथ उसका व्यवहार गलत होगा तो वह किसी भी तरह से अच्छे इन्सानों में नहीं गिना जाएगा। इसलिये हम तमाम इन्सानों को एक दूसरे के साथ भलाई का व्यवहार करना चाहिए और हमें अच्छे और बुरे का स्तर भलाई और नेकी को मानना चाहिए और ऐसे इन्सान से प्रभावित होना चाहिए जिसके कर्म अच्छे हों और उन इन्सानों को भलाई की तरफ आमंत्रित करना चाहिए जो नेकी और भलाई की राह से भटक कर नकारात्मक सोच और कर्म में संलिप्त हो गये हों।

दुनिया में बड़े बड़े नामवर लोग गुजरे हैं लेकिन उनमें से ऐसे भी हैं जिनको दुनिया केवल उनके बुरे कर्मों की वजह से जानती है, इस लिये हमें ऐसे सत्य कर्म करने चाहिए जिससे दुनिया हमारे अच्छे कर्मों से याद करे।

इस संसार में इन्सान अच्छे कर्म करने के लिये भेजा गया है, हर इन्सान के सामने अच्छे और बुरे का अन्तर स्पष्ट है, यह संसार इन्सान की आजमाइश की जगह है यह ज़िन्दगी बड़ी कीमती है, दुनिया की परीक्षा में पास होने का मतलब यह है कि हमारे कर्म ऐसे हों जो हमें स्वर्ग में ले जाने का माध्यम बनें और कोई ऐसा कर्म नहीं करना

चाहिए जो हमारे लिये नरक की तरफ ले जाने और असफलता का माध्यम बने। अल्लाह से दुआ है कि वह हम तमाम इन्सानों को अच्छे कर्म करने की क्षमता दे।

मां बाप से कुछ बातें:

कुरआन में तज़किया का जो शब्द प्रयोग हुआ है उसका मतलब यह है कि इन्सान बुरी चीज़ों को छोड़ दे और अच्छी आदतों को अपना ले जो उसके चरित्र को बेहतर बनाती हैं क्योंकि यह इन्सान के दर्जे को बुलन्द करती हैं, बुरी आदतों से इन्सान का सम्मान घटता है। ज्ञान का चरित्र को बेहतर बनाने में बड़ा अहम रोल होता है इन्सान के पास जिस प्रकार का ज्ञान हो गा उसी के अनुसार उसका चरित्र डेवलप करेगा इसी लिये इस्लाम ने अच्छे ज्ञान और सकारात्मक ज्ञान पर बल दिया है और अज्ञानता के अंधेरे से निकल कर ज्ञान के उजाले में आने की अपील की है क्योंकि ज्ञान इन्सान को सही रास्ते पर ले जाता है।

बच्चे अपने बचपन में जो कुछ सीखते हैं उसका असर उनके जीवन के आखिरी दिनों तक बाकी रहता है इसलिये मां बाप को चाहिये कि बच्चों के रहन सहन और उनकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दें और आज आर्ट के नाम पर टीवी चैनलों पर जो नकारात्मक प्रोग्राम दिखाए जा रहे हैं उनसे बच्चों को दूर रखें। क्योंकि गफलत का परिणाम हमें स्वयं भुगतना पड़ेगा। घर के माहौल का बच्चों के जीवन पर बहुत गहरा असर डालता है और मां बाप और घर के दूसरे बड़े बुजुर्गों का चरित्र और उनकी आदतें ठीक रहेंगी तो बच्चों में अच्छी आदतों को अपनाने की ललक बढ़ेगी।

> अगर हर मां बाप यह संकल्प कर लें कि हम अपनी औलाद को झूठ चुगल खोरी, बैमानी और दूसरी बुराइयों से बचा कर रखेंगे तो फिर समाज में हर तरफ शान्ति ही शान्ति नज़र आयेगी और नफरत की भावना स्वयं ही ध ाराशायी हो जायेगी। यह हम सभी देश वासियों की संयुक्त जिम्मेदारी है कि हम देश को आगे बढ़ाने के लिये ऐसी पीढ़ी तैयार करें जो सकारात्मक विचार से लैस हो और हमारा देश एक विशिष्ट देश के रूप में पहचाना जाये

आज दुनिया में जो अशान्ति है वह हम इन्सानों की लापरवाही का परिणाम है, इन्सान के चरित्र के सुध ाार के माध्यम से ही संसार में अम्न व शान्ति, एकता, भाइचारा, सौहार्द और सदभावना स्थापित किया जा सकता है। इन्सान को बेहतर बनाने का सबसे अच्छा और प्रभावी दौर उसका बचपन होता है। अगर हर मां बाप यह संकल्प कर लें कि हम अपनी औलाद को झूठ चुगल खोरी, बैमानी और दूसरी बुराइयों से बचा कर रखेंगे तो फिर समाज में हर तरफ शान्ति ही शान्ति नज़र आयेगी और नफरत की भावना स्वयं ही ध ाराशायी हो जायेगी। यह हम सभी देश वासियों की संयुक्त जिम्मेदारी है कि हम देश को आगे बढ़ाने के लिये ऐसी पीढ़ी तैयार करें जो सकारात्मक विचार से लैस हो और हमारा देश एक विशिष्ट देश के रूप में पहचाना जाये और विकास के उस पायदान पर पहुंच जाए जहाँ तक पहुँचने का हमारे पूर्वजों ने सपना देखा था।

सऊदी युवराज मुहम्मद बिन सलमान और उनकी कल्याणकारी सेवाएं

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

युवराज शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान हफिजहुल्लाह की शख्सियत अत्यंत आकर्षक और सऊदी शहरियों की निगाह में मकबूल है इसकी वजह यह है कि अपने सम्माननीय पिता सलमान बिन अब्दुल अजीज़ की तरह कल्याणकारी और मानवता की सेवा से संबन्धित कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। आपने अपने नाम से एक चियरिटी फाउन्डेशन की स्थापना की है जिसका नाम मुहम्मद बिन सलमान अब्दुल अज़ीज़ चियरिटी फाउन्डेशन मिस्कुल खैरिया रखा है जिसकी देख भाल इस कमेटी की गवर्निंग कमीटी के सदस्यों के ज़िम्मे है। इस फाउन्डेशन का मक़सद यह है कि जारी योजनाओं को प्रगति दी जाए, सऊदी अरब नौजवानों को ज्ञान, अमल, साहित्य व सांस्कृति और साइंस व टेकनालोजी के मैदान में तरक़्क़ी देकर देश की सेवा के योग्य बनाया जाए।

युवराज शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान आले सऊद के कल्याणकारी कारनामों का अन्दाज़ा इन निम्नलिखित पदों से भी लगा सकते हैं जिन पर आप विराजमान हैं।

- शाह सलमान योथ सेन्टर के चियर मैन-इस केन्द्र की स्थापना शाह सलमान बिन अब्दुल अजीज़ के द्वारा अमल में आया था ताकि सऊदी नौजवानों की मदद और उनके संकल्पों को व्यवहारिक रूप देकर देश के प्रयासों को गति दी जा सके।
- किंग सलमान चेरीटेबल हाउसिंग सूसाइटी के उपाध्यक्ष और आप इस सूसाइटी की प्रबन्धक कमेटी के सुपरवाइज़र भी हैं। यह सूसाइटी विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों, समाजी माहिरीन और कम्यूनिटी के पदध ाारियों के द्वारा गठित की गई है ताकि कम आमदनी वाले लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।
- रियाज के गैर सरकारी सहायता प्राप्त मदारिस के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स के चियर मैन
- किंग अब्दुल अज़ीज़ सऊद सेन्टर के एगजीकिवटिव कमीटी के चियरमैन

इसके अलावा आपके ज़िम्मे पूर्व के पद भी ऐसे थे जिनसे मालूम होता है कि आप कल्याणकारी और इन्सानी कामों में कितनी रूचि रखते हैं और सऊदी अरब और वहां के अवाम की तरक्क़ी और उन्हें नई बुलन्दियों पर पहुंचाने के लिये अत्यंत उत्सुक हैं। उनमें से बाज निम्नलिखित हैं।

- इब्ने बाज़ चेरीटेबल फाउनडेशन के ट्रस्टीज बोर्ड के सदस्य
- रियाज़ क्षेत्र के चियरिटी एसोसिऐशन के उच्च सहयोग कोन्सिल के सदस्य
- रियाज़ में काइम चियरिटेबल सूसाइटी बराये हिफज़े कुरआन के बोर्ड आफ डारेक्टर्ज़ के सदस्य

❑ ख़ैराती एदारा जमीअतुल बिर के बोर्ड आफ डायरेक्टर्ज के सदस्य

❑ सऊदी मैनेजमेन्ट की एसोसीएशन के मान्यक (एज़ाज़ी) सदस्य

❑ मादक पदार्थों की रोक थाम के लिये नेशनल ऐसोसिएशन के मान्यक सदस्य

❑ एदारह बराये हस्तकला विकास के एजाज़ी सदस्यगण कोन्सिल के चियरमैंन

❑ शादी और खानदान की देखभाल के लिये स्थापित की गई इब्ने बाज़ चियरिटी एसोसीशन के संस्थापकों में से हैं।

यह तमाम पद बताते हैं कि युवराज शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान हफि० स्वयं एक संस्था की हैसियत रखते हैं और रिफाही कामों के द्वारा मानवता के कल्याण एवं विकास में आप काफी रूचि रखते हैं और सऊदी समाज के लिये अत्यंत उलफत और मुहब्बत रखते हैं और यही वजह है कि आप दर्जन भर से अधिक कमेटियों, ऐसोसिएशनों, संस्थाओं एवं संगठनों के सदस्य, अध्यक्ष या उनसे किसी पहलू से जुड़े हुए हैं।

सऊदी युवराज शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान अपनी खुदादाद योग्यताओं और बुलन्द राजनीतिक बुद्धिमत्ता के आधार पर विभिन्न अवसरों पर अनेक इनआमात से सम्मानित किए गये हैं और कई सभाओं में आपको सम्मानित किया गया है। इन पुरस्कारों में सबसे महत्वपूर्ण १३ जून २०१७ ई० को फारबस मैगज़ीन ने वली अहद (युवराज) मुहम्मद बिन सलमान को गलोबल चेन्ज लीडर के तैर पर चयनिय किया। बलोम बर्ग की वार्षिक सूचि के अनुसार २०१७ ई० में ५० लोगों में से तीन सबसे अधिक प्रभावी हस्तियों में से एक थे। २०१७ ई० के अंत पर अमरीकी टाइम्स मैगज़ीन ने अपने पाठकों के मतदान के द्वारा आप को पर्सन आफ दी इयर का सम्मान दिया।

विदेशी पालीसी मेगज़ीन ने आप को दुनिया के सौ चिंतकों और लीडरों की सूची में सबसे प्रभावी लीडर क़रार दिया। अमरीकी फोरबस मैगज़ीन की ७५ प्रभावी हस्तियों के चयन में वैश्विक एतबार से आठवें स्थान पर और अरब में आप पहले नंबर पर थे।

सऊदी अरब का भविष्य अत्यंत पुर्जोश, जवां हिम्मत, क्षमतापूर्ण हाथों में है। वली अहद मुहम्मद बिन सलमान और इन जैसे अन्य सऊदी नौजवान लीडरान जहां एक तरफ अपने अन्दर जोश एवं उत्साह रखते हैं, वहीं उनकी साफ सुथरी और बेहतरीन पालन पोषण और प्रशिक्षण ने इस जोश और जजबे की एक सीमा भी तय कर रखी है और उनके अन्दर इस्लामी शिक्षाओं का ज्ञान भी भरपूर मात्रा में है और वह ओलमा की निगरानी में काम करते हैं जिसकी वजह सी बहुत सी गलतियों से अल्लाह तआला उनको सुरक्षित रखे हुए है। अल्लाह तआला हरमैन शरीफैन (सऊदी) अरब और सभी देशों की हिफाज़त करे और नई पीढ़ी को अच्छे आचरण वाला और बुद्धिमत्ता दे ताकि सऊदी अरब को सहीह दिशा में विकास एवं प्रगति देते हुए मुसलमानों के दिलों की ध ड़कन बनाए और हमारे प्रिय देश इसको पक्का सच्चा दोस्त बनाए। आमीन

❑ ❑ ❑

औलाद का प्रशिक्षण

डा० मुहम्मद तैयब शम्स

इस संसार में इन्सान ही एक ऐसी हस्ती है जिनके वजूद से अम्न व शान्ति, भलाई और बरकत का सिरा जुड़ा हुआ है और इन्सान की शरारतों से हर जगह फितना व फसाद का बाज़ार गर्म हो जाता है। इन्सान को नेक या बुरा बनाने में मां बाप और घर की तरबियत (प्रशिक्षण) का बड़ा दख़ल होता है। औलाद की सहीह तालीम व तरबियत (शिक्षा एवं प्रशिक्षण) और उचित पालन पोषण से वह अच्छे इन्सान की शक्ल में समाज के सामने होता है गोया उनकी वजह से संसार एक खूबसूरत फूल बन जाता है और उनसे भलाई एवं बरकत जुड़ जाती है। इसलिये औलाद को अच्छी तालीम व तरबियत देना मां बाप के लिये ज़रूरी है। तमाम नबियों और पैगम्बरों ने अल्लाह से नेक औलाद की दुआ की और उन्हें बेहतरीन तालीम तरबियत दी। कुरआन में है ''ऐ हमारे परवरदिगार! तू हमें हमारी बीवियों और औलाद से आंखों की ठंडक दे और हमें परहेज़गारों का पेशवा बना''। (सूरे फुरकान-७४)

इसलिये औलाद की तरबियत में शुरू से ही ध्यान देने की ज़रूरत है और इस तरह पहल करने की ज़रूरत है। बच्चों की तरबियत में केवल पढ़ाने का ही नहीं बल्कि खेल कूद, हंसी मज़ाक और सवाल जवाब के विभिन्न तरीकों से बच्चों की जेहनी तरबियत करनी चाहिए और बच्चों को भी बड़ों और बुजुर्गों की मज्लिसों में शरीक करना चाहिये।

उमर बिन सलमा रजिअल्लाहो तआला अन्हो स रिवायत है कि मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की परवरिश में था और मेरा हाथ पलेट में घूमता था तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे फरमायाः ''बिस्मिल्लाह कह कर अपने दाएं हाथ से खाओ और इस जानिब से खाओ जो तेरे सामने है'' (बुखारी ५३७६, मुस्लिम १८.३०)

औलाद की तरबियत करते वक़्त उनसे प्यार मुहब्बत का बर्ताव करना चाहिए, अगर एक से अधिक औलाद हों तो उनके बीच में न्याय को बाकी रखना चाहिए, बेटा बेटी में अन्तर नहीं करना चाहिए।

औलाद को बचपन से ही नमाज़ रोज़ा हज्ज वगैरह इबादत में शरीक करना चाहिए। उनहें सलाम करने का तरीक़ा बड़ों का अदब व एहतराम करने का तरीक़ा बात चीत के आदाब, दुआएं, सब्र व शुक्र और सच बोलने की तलकीन करते रहना चाहिए, इसी तरह से उन्हें हर वह बर्ताव सिखाना चाहिए जिससे बच्चे के अन्दर सकारात्मक आदतें उत्पन्न हो सकें। बच्चों की तरबियत के दौरान यह ध्यान रखना चाहिये उनको नकारात्मक अर्थात बुरी आदतों मिसाल के तौर पर किसी का मज़ाक उड़ाना, ऐब निकालना, घमण्ड करना, झूठ बोलना, गीबत करना, चोरी करना, गाली गुलूज देना, वादा खिलाफी करना, और मामूली कारण के आधार पर संबन्ध तोड़ने से बचाना आवश्यक है। सहाब-ए-किराम अपने बच्चों को शुरू ही से अच्छी तरबियत करते थे उन्हें नमाज़ रोज़ा हज वगैरह इबादत में शरीक करते थे।

औलाद की ऐसी तरबियत करें कि औलाद समाज के लिये शुभचिंतक राष्ट्र एवं समुदाय और पूरी मानवता का सेवक बन सकें और मां बाप के लिये नेमत और रहमत बन जाएं।

गुनाह को मिटा देने वाले कर्म

हाफिज़ इब्ने हजर रह०

हम पर अल्लाह की कृपा व दया है कि उसने हमारे लिये ऐसे कर्म तय किये हैं जो हमारे गुनाहों का कफ्फारा (प्रायश्चित) कर सकें और हमारी गलतियों को मिटा सकें। इन कर्मों का वर्णन कुरआन और सहीह हदीसों में पाया जाता है।

१. मुकम्मल वजू करना और मस्जिद जानाः अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्या मैं तुम को ऐसी बात न बताऊं जिसकी वजह से यह गलतियों को मआफ करता है और दर्जात को बुलन्द करता है? सहाबए किराम ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल अवश्य बताइये। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया नापसन्दीदगी के बावजूद पूरा वजू करना, मस्जिदों की तरफ नमाज़ के लिये ज़्यादा चलना, एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तेज़ार करना। यही तो तुम्हारे दीन की सरहदों की हिफ़ाज़त है'' सहीह मुस्लिम (बहवाला सहीहुत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब-१८५)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरे पास रात को मेरे रब की तरफ से एक आने वाला (फरिश्ता) आया और कहा ऐ मुहम्मद! क्या तुम जानते हो कि मला-ए-आला (फरिश्ते) किस चीज़ के बारे में झगड़ रहे हैं, मैंने कहाः हां, गुनाहों के प्रायश्चित, दरजात की बुलन्दी, जमाअत के लिये चलने, ठण्डी रातों में पूरा वजूद करने और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इन्तेज़ार करने के बारे में (झगड़ा) करते हैं जो शख्स इन चीज़ों की हिफाज़त करेगा भलाई के साथ ज़िन्दा रहेगा और जिस की वफात इन पर होगी तो उसकी वफात भलाई के साथ होगी और वह अपने गुनाहों से ऐसे ही पाक व साफ हो जाएगा जैसे उसकी मां ने उसको उसी दिन जनम दिया हो।'' (सुनन तिर्मिज़ी,बहवाला सहीहुत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब)

२. अरफा और आशूरा का रोज़ाः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला के फज़्लो करम (दया, करूणा) से अरफा (९वीं ज़िल हिज्जा) का रोज़ा अगले और पिछले दो साल के गुनाहों का कफ्फारा होता है और आशूरा का रोज़ा पिछले (एक) साल के गुनाहों का कफ्फारा होता है'' (सुनन तिर्मिज़ी वहवाला सहीहुल जामे ३८५३)

३. रमज़ान का क़्यामः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने रमज़ान के महीने में ईमान और सवाब की उम्मीद से क्याम (इबादत) की अल्लाह तआला उसके पिछले गुनाहों को बख्श देगा। (सहीहैन बहवाला सहीहुल जामे ६४४०)

४. हज़ मबरूरः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हज मबरूर का बदला जन्नत ही है।

५. तंगदस्त (गरीब, परेशान हाल) को मआफ करनाः अबू हुरैरह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक ताजिर

लोगों को कर्ज़ दिया करता था, उसने अपने गुलामों को ज़ोर देकर कह रखा था कि जब तुम किसी तंगदस्त को देखो तो उसे मआफ कर दिया करो। मुमकिन है (इसकी वजह से) अल्लाह तआला हमें माफ कर दे (उसके इस अमल) से अल्लाह तआला ने (खुश होकर) उसको मआफ कर दिया। (फतहुल बारी ४/३०६)

६. बुराईयों के बाद नेकी करनाः कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''यकीनन नेकियां बुराइयों को दूर कर देती हैं''। (सूरे हूद-११४)

जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुआज़ रज़िअल्लाहो तआला अन्हो को यमन भेज रहे थे तो वसिय्यत करते हुए फरमायाः ऐ मुआज़ जहां कहीं भी रहो अल्लाह से डरते रहो और बुराइयों के बाद नेकियां करते रहो, इससे बुराइयां खत्म हो जाएंगी और लोगों के साथ अच्छे स्वभाव और मिलनसारी से पेश आओ'' (मुसनद अहमद सुनन तिर्मिज़ी बहवाला सहीहुल जामे-९७)

७. सलाम को फैलाना और लोगों से भले तरीके से बात करनाः मग़्फिरत (क्षमायाचना) वाजिब करने वाली चीज़ों में सलाम को रिवाज देना और लोगों से अच्छी बातें करना है। (मआरिफुल अखलाक खराइती, सिलसिलातुल अहादीसिस्सहीहा १०३५)

८. मुसीबत पर सब्र करनाः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला फरमाता है कि जब मैं अपने किसी मोमिन बन्दे को आज़माइश में डालता हूं और मोमिन बन्दा मेरी प्रशंसा बयान करता है तो वह अपने बिस्तर से पाक व साफ होकर इस तरह उठता है जैसे वह आज मां के पेट से पैदा हुआ हो और अल्लाह तआला फरिश्तों से कहता है कि मैंने अपने बन्दों को कैद व बन्द में रखा और आजमाइश में डाला (और उसने सब्र किया तो उसकी बीमारी की हालत का सवाब वैसे ही लिखो जैसे तुम लोग उसकी तन्दुरूस्ती की हालत में लिखा करते थे'' (मुसनद अहमद ४/१२३)

ऐ मुआज़ जहां कहीं भी रहो अल्लाह से डरते रहो और बुराइयों के बाद नेकियां करते रहो, इससे बुराइयां खत्म हो जाएंगी और लोगों के साथ अच्छे स्वभाव और मिलनसारी से पेश आओ''

९. पांचों वक्त की नमाज़ पाबन्दी से पढ़ना, जुमा और रमज़ान के रोज़े की पाबन्दी करना। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया पांचों नमाज़ें (एक नमाज़ से लेकर दूसरे नमाज़ तक) और जुमा से जुमा तक और रमज़ान से रमज़ान तक के दर्मियान में की हुई ग़लतियों को मिटाने वाली हैं शर्त यह है कि महा पापों (गुनाहे कबीरा) से दूर रहा जाए। सहीह मुस्लिम बहवाला शरह सहीह मुस्लिम, इमाम नव्वी ३/१२०)

१०. मुकम्मल वजू करनाः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई मोमिन या बन्दा वजू करता है और चेहरा धुलता है तो आखों से की गईं खताएं पानी या पानी के आखिरी क़तरा (बूंद) के साथ निकल जाती हैं और जब हाथ धुलता है तो जिन गुनाहों को हाथ से किया था वह सब पानी या पानी के आखिरी क़तरे के साथ निकल जाते हैं और जब पैर धुलता है तो पानी या पानी के आखिरी कतरा के साथ वह तमाम गुनाह बह जाते हैं जिनको पैर से चलकर किया यहां तक कि वह गुनाहों से पाक साफ हो जाता है (शरह सहीह मुस्लिम इमाम नौवी ३/१३५)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने ''सुब्हानल्लाही व बिहमदिही'' दिन में सौ बार पढ़ा तो उसकी तमाम ख़ताएं बख्श दी जाएंगी अगर्चे समन्दर की झाग के बराबर हो'' (सहीहैन बहवाला शरह सहीह मुस्लिम इमाम नौवी १७/२०)

११. अज़ानः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः निसन्देह मुअज्ज़िन के लिये मग़फिरत की दुआएं करती हैं वह तमाम चीज़ें जहां तक उसकी आवाज़ सुनी जाती है'' (मुसनद अहमद बहवाला सहीहुल जामे १६२६)

१२. नमाज़ः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम्हारा क्या ख्याल है उस आदमी के बारे में जिसके दरवाज़े के पास नदी है और वह इसमें पांच बार गुस्ल (स्नान) करता है तो क्या उसके शरीर पर कुछ मैल कुचैल बाक़ी रहेगा? सहाबा किराम ने जवाब दिया नहीं, उसके शरीर पर कुछ भी मैल कुचैल बाकी नही हरेगा। इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया ऐसे ही पांच वक्त की नमाज़ों की मिसाल है अल्लाह तआला इसके ज़रिये गुनाहों को मिटा देता है। (फतहुल बारी २/११)

१३. ज़्यादा से ज़्यादा नफल नमाज़ें पढ़नाः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ज़्यादा से ज़्यादा (नफल नमाज़ें) सजदे करो। अल्लाह के लिये तुम जो भी सजदा करोगे वह हर सजदे के बदले तुम्हारा एक दर्जा बुलन्द करेगा और एक गुनाह मआफ फरमाएगा। (शरह सहीह मुस्लिम इमाम नौवी ४/४५१)

> जो लोग एकटठा हो कर अल्लाह का ज़िक्र करते हैं और इससे केवल अल्लाह की खुशी चाहते हैं तो आसमान से पुकार लगाने वला आवाज़ देता है कि तुम (इस मज्लिस से उठकर इस हाल में वापस जाओ कि) तुम्हारे गुनाह नेकियों में बदल दिये गये।

१४. नमाज़ के लिये जानाः सहीह बुखारी में हज़रत अबू हुरैरह की रिवायत है जब बन्दा वज़ू करता है और मुकम्मल वज़ू करता है, फिर वह नमाज़ ही के मक़सद से मस्जिद जाता है तो उसके हर क़दम के बदले उसका एक दर्जा बुलन्द करता है और उसके गुनाह मिटा देता है (फतहुल बारी-२/१३१)

१५. अल्लाह तआला की समीपता की गर्ज़ से मज्लिसों में जानाः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो लोग एकटठा हो कर अल्लाह का ज़िक्र करते हैं और इससे केवल अल्लाह की खुशी चाहते हैं तो आसमान से पुकार लगाने वला आवाज़ देता है कि तुम (इस मज्लिस से उठकर इस हाल में वापस जाओ कि) तुम्हारे गुनाह नेकियों में बदल दिये गये। (मुसनद अहमद ३/१४२, मजमऊज्जवाइद १०/७६)

१६. सदक़ा करनाः क़ुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''तुम सदक़ा व ख़ैरात करो तो वह भी अच्छा है और अगर तुम इसे पोशीदा तौर पर मिस्कीनों को दे दो तो यह तुम्हारे गुनाहों को मिटा दे गा और अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल की ख़बर रखने वाला है'' (सूरे बक़रा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः सदक़ा गुनाहों को ऐसे ही खत्म कर देता है जैसे पानी आग को बुझाता है। (मुसनद अहमद)

रजब के महीने में प्रचलित बिदअत

अब्दुल मन्नान शिकरावी

इस्लाम में जीवन गुजारने के लिये जिन बातों की ज़रूरत है स्पष्ट शब्दों में इसको बता दिया गया है। अपने पालनहार को किन कर्मों से खुश किया जा सकता है और उसकी समीपता प्राप्त करने के लिये दुनिया और आखिरत की भलाई कैसे हासिल की जा सकती है। इसके बाद किसी को भी शरीअत में न कम करने का अधिकार है और न बढ़ाने का अधिकार, कमी करेंगे तो कोताही के मुजरिम, बढ़ाएंगे तो सीमा से आगे बढ़ने के मुजरिम। इसलिये इस बात पर बहुत जोर दिया गया है कि सीमा के अन्दर रह कर जिन्दगी गुज़ारी जाए वरना सभी कर्म अकारत एवं बर्बाद हो जाएंगे।

एक व्यक्ति इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैहि के पास आया और पूछने लगा कि मैं एहराम कहाँ से बांधूं आपने जवाब दिया कि जुल हुलैफा से यहाँ से अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बांधा था। उस व्यक्ति ने कहा कि मैं मस्जिदे नबवी, अल्लाह के रसूल की क़ब्र से एहराम बांधना चाहता हूं। आपने फरमायाः ऐसा न करो वरना मुझे डर है कि तुम फितने में पड़ जाओगे। उस व्यक्ति ने कहा कि इसमें फितने की क्या बात है? मैं चन्द मील ही तो बढ़ा रहा हूं। इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैहि ने जवाब दिया इससे बड़ा फितना और क्या हो सकता है कि तुम यह समझो कि मैंने वह फज़ीलत (सवाब) हासिल कर ली जिसमें अल्लाह के रसूल ने कोताही की। मैंने अल्लाह का फरमान सुना है ''जो लोग रसूल के हुक्म की मुखालिफ़त करते हैं, उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई ज़बरदस्त आफ़त न आ पड़े या उन्हें दर्दनाक अज़ाब न पहुंचे''। (सूरे नूर-६३)

सहाबए किराम रिजवानुल्लाही अलैहिम अजमईन, ताबईन व तबा ताबईन अइम्माए किराम रहमतुल्लाही अलैहिम का दीनी मसाइल को समझने का यही तरीका था वह दीनी मामलात व मसाइल में किसीभी कमी या ज़्यादती को जायज़ नहीं समझते थे।

इसलिये हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि शरीअत ने जो अहकाम जो अहकाम तय किये हैं उनका ख्याल रखा जाए और उनमें किसी प्रकार की कमी ज़्यादती न की जाए। अपनी तरफ से इन महीनों में किसी भी प्रकार की इबादत या अल्लाह को खुश करने का कोई ऐसा अमल विशेषता के साथ न किये जाए जिसका इस्लाम में कोई सुबूत न हो।

कुरआन करीम में यह आयत ''आज हमने दीन को मुकम्मल कर दिया'' नाज़िल होने के बाद दीन मुकम्मल हो गया। इसके बाद दीनी मसाइल व शिक्षाओं में अपनी तरफ से कुछ बढ़ाना बहुत ही संगीन जुर्म है। बाद के जमानों में कुछ लोगों ने खास अवसर पर कुछ खास दीनी मसाइल गढ़ लिये जिसकी इस्लाम में कदापि इजाज़त नहीं थी। इसी तरह से बाज़ महीनों और दिनों में भी अपनी तरफ से कुछ आमाल गढ़ लिये। इसी तरह से रजब के महीने में कुछ खुद की गढ़ी हुई इबादतें रायज कर लीं जिनको यहां संक्षिप्त में उल्लेख किया जा रहा है।

जाहिलियत के जमाने में मुश्रिकीन रजब के महीने का बड़ा सम्मान करते थे और इस महीने में खास तौर से रोज़ा रखते थे। खैरूल कुरून के बाद कुछ लोगों ने इस्लाम

में भी जाहिलीयत के जमाने की रिवायत को जारी व बाक़ी रखने की कोशिश की जबकि शैखुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया रह० के कथन के अनुसार रजब में रोज़े से संबन्धित सभी हदीसें जईफ बल्कि मौजूअ (गढ़ी हुई) हैं।

बाज़ लोग रजब के महीने में एक ख़ास नमाज़ पढ़ते हैं जिसका नाम वह सलातुर्रग़ाइब रखते हैं वह इसे जुमा की रात के पहले हिस्से में मग़रिब और इशा के दर्मियान अदा करते हैं जिसके बिदअत होने पर ओलमा का सर्व सम्माति (इत्तेफाक़) है। इमाम नौवी रह० से सलातुर्रग़ाइब के बारे में सवाल किया गया कि इसकी अदायगी की कोई फज़ीलत है या बिदअत है? इमाम नौवी रह० ने फरमाया यह बहुत ही खराब बिदअत है जिसको छोड़ना, इससे दूर रहना और इस बिदअत को करने वाले पर नकीर करना ज़रूरी है। हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जो हमारे दीन में ऐसी नई चीज़ पैदा करे जो हमारे दीन में नहीं है तो वह काबिले क़ुबूल नहीं है।

बाज लोग रजब के महीने में मदीना तैइबा की ज़ियारत करने जाते हैं और इसे रजबिया का नाम देते हैं। उनका ख्याल है कि यह सुन्नत है जबकि इसकी कोई असल नहीं है इसका कहीं कोई सुबूत नहीं है इसलिये इसको सुन्नत करार देने और इसे अल्लाह की समीपता का ज़रीआ समझना दुरूस्त नहीं।

रजब की २७वीं रात में बाज लोग महफिलें आयोजित करते हैं और समझते हैं कि यही इसरा और मेराज की रात है, इस रात में कलाम पेश किए जाते हैं, तराने और क़सीदे पढ़े जाते हैं जिसका खैरूल कुरून में कोई रिवाज नहीं था। इमाम इब्ने तैमिया रह० फरमाते हैं ''जिस रात के बारे में लोगों का ख्याल है कि वह मेराज की रात है इसमें न कोई क्याम साबित है और न इसके अलावा कोई और अमल''

कुछ लोग रजब के महीने में उमरा करने को बड़े सवाब का काम समझते हैं जबकि इसकी फज़ीलत के सिलसिले में शरीअत में कोई दलील नहीं है। हज़रत आइशा रज़िअल्लाहो अन्हा बयान करती हैं अल्लाह अबू अब्दुर्रहमान पर रहम करे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो भी उमरा किया मैं इसमें आप के साथ थी आपने रजब के महीने में एक भी उमरा नहीं किया।

बाज़ लोगों का रूटीन है कि वह रजब के महीने में ज़कात अदा करते हैं जबकि शरीअत में इसे खास करने की कोई असल नहीं है। लताइफुल मआरिफ में अल्लामा इब्ने रजब हंबली से एक कथन बयान किया गया है रजब महीने में खुसूसियत के साथ ज़कात निकालने की कोई शरई दलील नहीं है बल्कि जब माल पर एक साल पूरा हो जाये तो ज़कात वाजिब हो जाती है, उसे उसी वक़्त अदा कर देनी चाहिए कोई भी महीना हो। इसी तरह अल्लामा इब्ने अत्तार फरमाते हैं कि मौजूदा ज़माने में लोग रजब के महीने में खुसूसियत के साथ ज़कात निकालते हैं इसकी कोई दलील नहीं है बल्कि जब साल पूरा हो जाए, ज़कात अदा कर देनी चाहिए, वह कोई भी महीना हो। (अल मुसाजला बैना इज़्ज़ बिन अबुस्सलाम व इब्नुस्सलाह)

रजब के महीने में इमाम जाफर सादिक़ रह० के नाम का हलवा तक़सीम किया जाता है जो रजब के कूडें के नाम से एक गढ़ी हुई इबादत है। और इसके बारे में अजीब व गरीब किस्से कहानियां गढ़ ली गई हैं। इसी तरह शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० की विलादत की रात में महफिलें आयोजित की जाती हैं और शैख रह० के नाम पर जानवर ज़बह किये जाते हैं और ऐसे ऐसे काम अंजाम दिए जाते हैं जिनकी

शरीअत में किसी भी तरह से वैधता नहीं है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं तुम्हें अल्लाह से डरते रहने, सुनन और मानते रहने की वसियत करता हूं अगर्चे तुम पर कोई गुलाम ही अमीर क्यों न बना दिया जाए। मेरे बाद जो जीवित रहेगा वह बहुत सा मतभेद (इख़्तेलाफ) देखे गा। ऐसी सूरत में तुम्हारे लिये अनिवार्य है कि मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत याफ्ता खुल-फाए राशिदीन की सुन्नत को अनिवार्य समझना, उसे मज़बूती से थाम लेना और डाढ़ से मज़बूत पकड़ लेना। दीन में नये अविष्कार शुदा कामों से अपने आप को बचाए रखना क्यों कि (सवाब की नीयत से किया गया) हर नया काम बिदअत और हर बिदअत गुमराही है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खुतबे में यह भी फरमाते थे सबसे सच्ची बात अल्लाह का कलाम है और बेहतरीन हिदायत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिदायत (राह) है। दीन में पैदा किये गये काम बदतरीन काम हैं और हर नया काम बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत को अपनाना और आपके मार्गदर्शन को मज़बूती से थामना और बिदआत से बचना हर मुसलमान के लिये अनिवार्य है तभी निजात की उम्मीद की जा सकती है। वरना दुनिया और आखिरत में घाटा ही घाटा होगा।

❑ ❑ ❑

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। जिन सदस्यों को हार्ड कापी न मिल सके वह हमारी वेब साइट से इसलाहे समाज के हर अंक लोड कर सकते हैं इसके अलावा इसलाहे समाज की पीडीएफ फाइल अपने स्मार्ट फून पर भी मंगवाया जा सकता है। इसलिए इसलाहे समाज के सदस्यों से अनुरोाध है कि वह अपना वाट्सएप नम्बर और ईमेल आई डी कार्यालय को अवश भेजें ताकि हार्ड कापी न मिलने की सूरत में उनको पीडीएफ फाइल ईमेल या स्मार्ट फून पर भेजा जा सके। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

आस्था का महत्व

❑**अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज रह०**

अल्लाह तआला ने जिन्नों और इन्सानों को अपनी इबादत के लिये पैदा किया है और यही समझाने के लिये अपने रसूल भेजे और किताबें नाज़िल कीं अतः खूब ग़ौर करके इस हक़ीक़त को समझ लेना चाहिये ताकि यह स्पष्ट हो जाये कि इस दीन के इस अहमतरीन बुनियाद के बारे में आज किस तरह अधिकतर मुसलमान अज्ञानता का शिकार हो चुके हैं यहां तक कि उन्होंने अल्लाह की इबादत में दूसरों को शरीक ठेहरा लिया है और अल्लाह के विशेषाधिकार में अल्लाह के अलावा को शामिल कर लिया है।

हमारे ईमान की एक खूबी यह भी है कि हम अल्लाह को इस संसार का पालनहार और स्वामी समझें। अल्लाह अपने ज्ञान और शक्ति के आधार पर जिस तरह चाहता है स्वयं सभी मामलों और तमाम संसार का स्वामी है, उसके अलावा कोई पालनहार नहीं है। उसने अपने बन्दों को दुनिया और परलय में कामयाब बनाने और सफलता की राह दिखाने के लिये अपने रसूल (सन्देशवाहक) भेजे और किताबें भेजीं, इन सब कामों में अल्लाह का कोई सहायक और साझीदार नहीं है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह हर चीज़ पर खूब निगेहबान है''। (सूरे ज़ुमर सूरे न० ३९ आयत न० ६२)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने सब आसमानों और ज़मीन को छः रोज़ में पैदा किया है फिर अर्श पर काइम हुआ वह शब (रात) से दिन को ऐसे छुपा देता है कि वह रात उस दिन को जल्दी से आ लेती है और सूरज और चांद और दूसरे सितारों को पैदा कया ऐसे तौर पर कि सब उसके हुक्म के पाबन्द हैं, याद रखो अल्लाह ही के लिये ख़ास है खालिक़ होना और हाकिम होना, बड़ी खूबियों से भरा हुआ है अल्लाह जो तमाम संसार का परवरदिगार है''। (सूरे शूरा, सूरे न० ७ आयत न० ५४)

अल्लाह पर ईमान लाने के अर्थ में यह बात भी शामिल है कि अल्लाह के तमाम अच्छे नामों और जिन खूबियों का कुरआन में उल्लेख है और जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से साबित है उन पर बिना कमी और ज्यादती के ईमान लाया जाए यह हम लोगों पर अनिवार्य है।

फरिश्तों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि इनको अल्लाह ने अपनी फरमाबरदारी के लिये पैदा किया है अल्लाह ने फरिश्तों की खूबी यह बताई है कि वह नेक बन्दे हैं वह किसी बात में अल्लाह के हुक्म का इन्कार नहीं करते बल्कि हमेशा अल्लाह के हुक्म की पाबन्दी करते हैं।

क़ज़ा व क़द्र पर ईमान लाने

का अर्थ यह है कि जो कुछ हो चुका है और जो कुछ होने वाला है अल्लाह को इसका ज्ञान है और अल्लाह तआला अपने बन्दों के सभी अहवाल को खूब अच्छी तरह जानता है। बन्दों के रिज़्क़, उनकी उम्र उनके सभी कर्म का पूर्ण ज्ञान है। अल्लाह से कोई भी चीज़ छुपी हुई नहीं है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जानता है'' सूरे तौबा आयत न० ११५

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''यकीनन हमें इल्म है जो कुछ जमीन उनमें से कम करती है और हमारे पास एक किताब (हर चीज़) की हिफ़ाज़त करने वाली है'' (सूरे क़ाफ़-आयत न०-४)

कुरआन में फरमायाः

''और हमने हर चीज़ को स्पष्ट किताब में सुरक्षित कर रखा है'' (सूरे यासीन-आयत न०-१२)

फरमायाः ''क्या आप नहीं जानते कि बेशक अल्लाह ही जानता है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है। निसन्देह यह (सब कुछ) किताब (लौहे महफूज़) में (दर्ज) है, बेशक यह अल्लाह पर बिल्कुल आसान है। (सूरे हज आयत न० ७० सूरे न०२२)

अल्लाह की इन तमाम खूबियों पर ईमान लाना हमारी आस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा और अनिवार्य है।

मासिक इसलाहे समाज

स्वामित्व का एलान

फार्म न० ४ रूल न० १

नाम पत्रिका	:	इसलाहे समाज
अवधिकता	:	मासिक
प्रकाशन स्थान	:	अहले हदीस मंजिल ४११६, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-६
मुद्रक व प्रकाशक	:	मुहम्मद इरफान शाकिर
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सी-१२५/२ अबुल फज़ल इन्कलेव-२ शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली२५
सम्पादक	:	एहसानुल हक
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	अहले हदीस मंजिल ४११६, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-६
स्वामित्व	:	मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द ४११६ उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-६

मैं मुहम्मद इरफान शाकिर, मुद्रक व प्रकाशक तस्दीक करता हूं कि उपर्युक्त बातें मेरे ज्ञान के अनुसार सहीह हैं।

हस्ताक्षर

प्रकाशक एवं मुद्रक

मुहम्मद इरफान शाकिर

बड़ा शिर्क

मौलाना कमालुददीन असरी

सवालः- अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे बड़ा गुनाह क्या है?

जवाबः- अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना सबसे बड़ा गुनाह है।

फरमाने बारी तआला हैः ''हज़रत लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए फरमाया था कि ऐ मेरे बेटे अल्लाह के साथ शिर्क मत करो यकीन मान लो कि शिर्क बहुत बड़ा गुनाह है।'' (सूरह लुक़मान)

और जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया गया कि सबसे बड़ा गुनाह क्या है? तो आपने फरमाया ''तुम्हारा अल्लाह के साथ शरीक और साझी ठहराना इसके बावजूद कि उसने तुम को पैदा किया'' (बुखारी व मुस्लिम)

सवालः बड़ा शिर्क किसे कहते हैं?

जवाबः ग़ैरूल्लाह की इबादत करना बड़ा शिर्क है। जैसे गैरूल्लाह को पुकारना और उनसे मुरादें मांगना या ज़िन्दा गायब लोगों से इस्तिग़ासा करना उनसे मदद तलब करना और मुसीबत के समय उनसे फरियाद करना। इरशादे बारी हैः ''अल्लाह की इबादत करो और किसी को उसका शरीक न बनाओ'' (सूरह निसा)

और फरमाने रसूल हैः ''गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ शिर्क करना है''। (बुखारी)

सवालः- कया इस उम्मत में शिर्क मौजूद है।

जवाबः- हाँ, इस उम्मत में शिर्क मौजूद है।

फरमाने बारी तआला है ''इन में अक्सर लोग अल्लाह पर ईमान नहीं रखते बल्कि वह मुश्रिक हैं''। (सूरह यूसुफ)

सवालः- मुर्दे या ज़िन्दा ग़ायब लोगों को पुकारने का हुक्म क्या है?

जवाबः- मुर्दों या ज़िन्दा ग़ायब लोगों को पुकारना बड़ा शिर्क है।

अल्लाह तआला का इरशाद है ''अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों को मत पुकारो जो तुम्हें नफ़ा व नुक़सान नहीं पहुंचा सकती और अगर तुमने यह काम किया तो बिला शुबहा तुम फौरन ज़ालिमों और मुश्रिकों में से हो जाओगे। (सूरह यूनुस)

और फरमाने रसूल है ''जो शख्स अल्लाह के सिवा किसी शरीक को पुकारने की हालत में मर जाए तो वह जहन्नम की आग में दाखिल होगा। (बुखारी)

सवालः क्या दुआ इबादत है?

जवाबः हाँ दुआ इबादत है।

इरशदे बारी तआला है ''तुम्हारे रब का फरमान है तुम मुझे पुकारो यानी मुझ से दुआ मांगो मैं तुम्हारी पुकार सुनूंगा यानी तुम्हारी दुआ कुबूल करूंगा बेशक वह लोग जो मेरी इबादत से सरताबी करते हैं जल्द ही वह ज़िल्लत के साथ जहन्नम में दाखिल होंगे''। (सूरे गाफिर)

और फरमाने रसूल है ''दुआ ही इबादत है। (अहमद, तिर्मिज़ी)

सवालः क्या मुर्दे दुआ और पुकार सुनते हैं?

बाक़ी पृष्ठ २१ पर

गुनाह से दीन व दुनिया की बर्कतों में कमी

अल्लामा इब्ने कैइम रह०

गुनाहों की एक सज़ा यह भी है कि उमर, रिज़्क़, ज्ञान, कर्म फरमांबरदारी और इबादत की बर्कतें छिन जाती हैं दीन व दुनिया की खैर व बर्कत गुनेहगार से छीन ली जाती है। नाफरमान बन्दे को आप सबसे ज़्यादा बे खैर बे बरकत पायेंगे। न उसकी आयु में बर्कत होगी न उसके दीन व दुनिया के किसी काम में।

हक़ीक़त तो यह है कि सृष्टि के गुनाहों की वजह से जमीन की बर्कतें छीन ली जाती हैं। करुआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''और अगर इन बस्तियों के रहने वाले ईमान लाते और परहेज़गारी अपनाते तो हम आसमान व ज़मीन की बर्कतों का दर्वाज़ा उनके लिये खोल देते।'' (सूरे आराफ आयत न०-९६)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः ''और अगर यह लोग सीधे रास्ते पर काइम रहते तो हम उन्हें पानी की रेल पेल से सैराब करते ताकि बरसात की नेमत में हम उनका परीक्षा करें'' (सूरे जिन्न आयत १६-१७)

गुनाह करने से बन्दे को रिज़्क व रोज़ी से वंचित कर दिया जाता है। हदीस शरीफ में हैः रूहुल कुद्स (जिब्राईल अलैहिस्सलाम) ने मेरे दिल में यह बात डाली कि कोई इन्सान उस वक़्त तक नहीं मरे गा जब तक कि वह अपनी रोज़ी पूरी न कर ले पस तुम अल्लाह तआला से डरते रहो और अच्छे तरीक़े से उससे मांगो, क्योंकि अल्लाह तआला से जो कुछ मिल सकता है, उसकी फरमांबरदारी से ही मिल सकता है और अल्लाह अतआला ने करूणा, प्रसन्नता अपनी खुशी और यक़ीन में रखी है। शक़ और नाराज़गी में दुख और ग़म के सिवा कुछ नहीं। (सुनन इब्ने माजा, हसन सहीह)

हक़ीक़त यह है कि रिज़्क़ व अमल का विस्तार उसकी अधिकता की वजह से नहीं है, उमर में ज़्यादती, महीनों और बर्सों की अधिकता की वजह से नहीं बल्कि रोज़ी और उमर में बढ़ोतरी यह है कि उमर और रोज़ी में बर्कत हो।

इन्सान की जिन्दगी तो उसी वक्त है जब उसका दिल और रूह जिन्दा हो और दिल की जिन्दगी उस वक़्त है जब वह अपने लिये अल्लाह का ज्ञान हासिल कर ले, अल्लाह से मुहब्बत करे उसकी इबादत करे, उसी की चौखट पर सर झुकाए उसी के ज़िक्र से सुकून और उसकी समीपता से भलाई हासिल करे जिसने यह जिन्दगी खो दी, उसने हर प्रकार की भलाई खो दी, चाहे उसे कुछ दुनिया मिल गई हो लेकिन इस ज़िन्दगी के बदले सारी दुनिया भी मिल जाए तो भी कम है। बन्दा जिस चीज़ को भी खो बैठे उसका बदल मुमकिन है लेकिन अल्लाह को खो बैठने का कोई बदल नहीं है। अल्लाह की बर्कत को कोई चीज़ रोक नहीं सकती हर वह चीज़ जो अल्लाह के सिवा किसी और के लिये हो उससे बर्कत छीन ली जाती है क्योंकि बर्कत तो अल्लाह की बारगाह से उतरती है, सारी बरकतें वहीं से आती हैं। इन्सान के लिये केवल वही चीज़ लाभदायक और कारामद होगी जो अल्लाह की बन्दगी में सर्फ की जाए। यही वजह है कि बाज़ लोगों के पास सोने चांदी के अंबार होते हैं और माल व दौलत से उनके ख़ज़ाने भरे होते हैं। लेकिन हकीक़त में इसमें से एक हज़ार दिरहम भी उनकी क़िस्मत में नहीं होती जो चीज़ अल्लाह के लिये हो उसी में अल्लाह तआला की भलाई और बर्कत होती है।

इन्सान और रास्तबाज़ी

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

कुरआन का एक क्रांतिकारी सिद्धांत यह है

''ऐ ईमान वालो! तुम इन्तेहाई मज़बूती और पोख्तगी से काइम रहने वाले और अल्लाह के लिये सच्ची गवाही देने वाले हो जाओ कि अगर वह गवाही खुद तुम्हारे खिलाफ या तुम्हारे मां बाप और क़राबतदारों के भी खिलाफ हो तो हरगिज़ न झिझको। अगर कोई मालदार या मुफिलस है तो अल्लाह तुम से ज़्यादा उन पर मेहरबानी रखने वाला है ऐसा न हो कि हवाए नफस की पैरवी तुम्हें इन्साफ से बाज़ रखे। अगर तुम (गवाही देते वक़्त) बात को घुमा फिरा कर पेश करो गे या गवाही देने से पहलू बचा जाओगे तो (याद रखो) अल्लाह तुम्हारे कामों से पूरी तरह आगाह है''। (सूरे निसा-३५)

इन्सान के लिये एक महत्वपूर्ण मरहला यह है कि वह हर हाल में सच पर क़ाइम और बाकी रहे और सच्ची गवाही देने में ज़रा भी पसो पेश न करे, अगर्चे सच बोलने से खुद उसे या उसके मां बाप और करीबतदारों (रिश्तेदारों) को नुकसान पहुंचे। अल्लाह तआला फरमाता है कि कोई मालदार हो या गरीब अल्लाह तआला की मेहरबानी उनके लिये गवाही देने वाले से कहीं ज़्यादा फायदेमन्द और नफा बख्श होगी। मतलब यह है कि इन्साफ के मामले में अपने मन की पैरवी हर्गिज़ न की जाए। यह भी नहीं कि बयान में हेर फेर का तरीक़ा अपनाया जाए या गवाही न देने ही से बचने को पनाहगाह बना लिया जाए। इस तरह इन्सानों को चकमा दिया जा सकता है लेकिन अल्लाह तआला तो दिलों और निय्यतों के भेद भी जानता है।

जो लोग अपने खिलाफ या अपने अत्यंत करीबी रिश्तेदारों के खिलाफ भी सच कहते हुए न झिझकें वह सृष्टि की भलाई और सफलता के लिये बहुमूल्य काम अंजाम दे सकते हैं, इसकी तवक्को (आशा) ऐसे लोगों से क्यों कर रखी जा सकती है जो एक शब्द जुबान से निकालते वक़्त दस बार सोचते हैं कि इससे हमारे हम खयालों पर तो ज़ोर न पड़ेगी और हमारे विरोधी तो फायदा न उठा लेंगे इनका नाम उनके यहाँ ''सियासतदानी'' और ''तदब्बुर'' है। विश्व शान्ति के ज़ामिन वही हो सकते हैं जो हक़ व इन्साफ के मामले में ईमानदारी के इस अत्यंत बुलन्द मर्तबे पर विराजमान हों।

बुराई के जवाब में भलाई

कुरआन मजीद का क्रांतिकारी सिद्धांत यह है ''और नेकी और बदी (बुराई) बराबर नहीं (बदी) को इस तरीक़े से दूर कर जो अच्छा है (यानी नेकी के ज़रिये से) फिर तुम देखोगे कि तुम्हारे और जिस शख्स के दर्मियान दुश्मनी है वह तुम्हारा गर्म जोश दोस्त बन जाएगा''। (सूरे हामीम सजदा-३४)

कुरआन मजीद के एक और व्यापक इंकेलाबी निमंत्रण पर गौर फरमाइये। अल्लाह तआला फरमाता है।

''अल्लाह हुक्म देता है कि (हर मामले में) इन्साफ करो सब के साथ भलाई से पेश आओ, करीबतदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो, और वह तुम्हें रोकता है बेहयाई की बातों

बाक़ी पृष्ठ २१ पर

(प्रेस विज्ञप्ति)

हमारे जवान देश की सीमाओं की हिफाज़त के लिये पूरी तरह सक्षम

दिल्ली २८ फरवरी २०१९

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर (अध्यक्ष) मौलाना असग़री अली इमाम महदी सलफी ने अख़बार के नाम जारी एक बयान में पुलवामा के जवानों के खून का बदला लेने के लिये पड़ोसी देश में आतंकवादियों के अड्डों पर कामयाब हमले की कार्रवाई की सराहना की है और कहा कि हमारे जवान अपने देश की सीमाओं की हिफाज़त करने के लिए पूरी तरह सक्षम हैं और वह दुश्मन की किसी भी कार्रवाई का मुंह तोड़ जवाब दे सकते हैं यह बात किसी से ढ़की छिपी नहीं है और दुश्मन इसको कई बार देख चुका है।

सम्माननीय अमीर ने कहा कि चूंकि जंग किसी समस्या का समाधान नहीं है इससे इन्सानी जान व माल की बड़े पैमाने पर तबाही व बर्बादी होती है और ख़तरनाक परिणाम निकलते हैं जिससे जितना भी संभव हो बचना चाहिए लेकिन तंग आयद बजंग आयद के अनुसार हमारे जवानों ने अत्यंत सब्र से काम लिया और जब दुश्मन ने मजबूर किया तो इंतेकाम लेने में किसी भी प्रकार की कमजोरी नहीं दिखाई बल्कि साबित कर दिया कि देश के जाँबाज़ जवान जो हर प्रकार के आधुनिक हथियार से सशस्त्र हैं और बड़ी शक्ति एवं मनोबल रखते हैं, वह आवश्यकता पड़ने पर दुश्मन को अच्छी तरह सबक़ सिखाना भी जानते हैं जिस पर हमें गर्व है। हम यह बात भी बता देना आवश्यक समझते हैं कि पड़ोसियों को भी अच्छा आचरण अदा करना चाहिए और हमारे सब्र व सहन को किसी भी प्रकार की कमज़ोरी नहीं समझनी चाहिए क्योंकि भारत देश अहिंसा पर विश्वास रखने के बावजूद बड़ी सी बड़ी शक्ति को मुंहतोड़ जवाब देने की शक्ति एवं क्षमता रखता है और किसी भी वक़्त उसका सब्र व सहन खत्म हो सकता है जैसा कि पिछले कल हमारी वायु सेना ने दुश्मन के ठिकानों को ध्वस्त व मलियामेट करके रख दिया। हिन्दुस्तान के अवाम चाहे वह कश्मीरी हों या गैर कश्मीरी इस प्रकार की कार्रवाइयों को गर्व की निगाह से देखना चाहिए और हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि शान्तिपूर्ण और कश्मीर के अवाम जो खालिस हिन्दुस्तानी शहरी हैं वह पुलवामा जैसे आतंकी हमले के बाद गलत फहमी में बगैर छान बीन किए किसी प्रकार के हिंसा का शिकार न बन पाएं, इस का संबन्धित प्रशासन और साधारण देशवासियों को विशेष ख्याल रखना चाहिए।

सम्माननीय अमीर ने अपने बयान को जारी रखते हुए कहा कि यह हक़ीक़त हमारी नज़रों से किसी भी हाल में ओझल नहीं होनी चाहिए कि दोनों देशों के अवाम भाई भाई हैं और वह प्यार व मोहब्बत के साथ एक अच्छे पड़ोसी की तरह रहना चाहते हैं। वह जंग और लड़ाई को सख़्त नापसन्द करते हैं क्योंकि यही बात सबके हित में है और इसी से दोनों देशों के विकास की संभावनाएं उज्जवल होंगी एवं अपनी शक्ति को नकारात्मक मामलों में ख़र्च करने के

बजाए सकारात्मक अंदाज़ में प्रयोग करके समृद्धि की ज़मानत प्राप्त हो गी और किसी तीसरी ताक़त जो लड़ाओ और कमाओ की राजनीति करती है इसका अवसर मिले इससे भी बचे रहेंगे।

सम्माननीय अमीर ने सभी देशवासियों से अपील की कि बिल्कुल संयम रहें, अच्छे और शान्ति पूर्ण शहरी और देश प्रेमी होने का सुबूत उपलब्ध करते रहें। किसी प्रकार के प्रोपैगण्डे और बदगुमानी का शिकार न हों और न ही किसी अफवाह से प्रभावित हो कर किसी तरह की अफरातफरी और अशान्ति का हिस्सा बनने से अपने आप को भी और दूसरों को भी महफूज़ रखने की कोशिश करें क्योंकि ऐसे अवसर पर जहां और ज़्यादा एकता, संगठित और आपस में सहयोग करने से अन्दुरूनी तौर पर इन्सान मज़बूत होता है वहीं पर विभिन्न प्रकार की अफवाहों और प्रोपैगण्डों का बाज़ार भी गर्म होता रहता है जो किसी भी तरह से देश वासियों और देश व अवाम के हक़ में लाभकारी नहीं होता।

जारी कर्ता

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

बाक़ी पृष्ठ १७ का

जवाबः मुर्दे किसी की दुआ और पुकार नहीं सुनते। इरशादे बारी तआला है ''बेशक तुम दुआ और पुकार न मुर्दों को सुना सकते हो और न बहरों को जबकि वह पीठ फेर कर चले जाते हैं।'' (सूरह नमल)

दूसरी जगह पर इरशाद फरमायाः ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते बेशक अल्लाह जिसे चाहता है सुना देता है और तुम क़ब्र के अन्दर के लोगों को नहीं सुना सकते।

सवालः- क्या अल्लाह मुर्दों को कुछ सुना सकता हैं?

जवाबः- हदीसों से साबित होता है कि मुर्दे क़ब्र में सुन सकते हैं। अल्लाह तआला जब चाहे उन्हें सुना सकता है प्यारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है तो वह उनके क़दमों की आवाज़ सुनता है। (बुखारी व मुस्लिम)

ऊपर ज़िक्र की गयी हदीसों से मालूम होता है कि मुर्दे कब्र में सुन सकते हैं अलबत्ता जवाब देने या फरियाद सुनने और मुराद पूरी करने से आजिज़ हैं।

बाक़ी पृष्ठ १६ का

से, हर तरह की बुराइयों से और जुल्म व ज़्यदती के कामों से, वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि (समझो) और नसीहत पकड़ो'' (सूरे नहल-१०)

अल्लाह का फरमान मुसलमानों के लिये यह है कि न्याय को अपनी आदत बनाओ, अच्छे आचरण में सक्रिय रहो, रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो। गलत कामों से बचो, हर तरह की बुराइयों से परहेज़ करो, जुल्म व ज्यादती से कभी आलूदह न हो (जुल्म व ज़्यादती से दूर रहो)

अद्ल न्याय तमाम अच्छे कर्मों की जड़ है जिस इन्सान के अन्दर यह बात पैदा हो गई कि जो बात करनी चाहिए इन्साफ के साथ करनी चाहिए उसने सब कुछ पा लिया एहसान का अर्थ यहाँ अच्छा कर्म है जो बात करो, अच्छाई की करो, नेकी और भलाई की करो, कर्म की बुनियाद भलाई हो बुराई न हो। जो हम से करीब का रिश्ता रखते हैं वह हमारे अच्छे व्यवहार के ज़्यादा हक़दार हैं। (रसूले रहमत -७६३-७६५)

एलाने दाख़िला

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था

अलमाहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामी में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन शनिवार 15 जून से सोमवार 17 जून 2019 तक लिया जायेगा। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें। आवेदन पत्र मिलने की आखिरी तारीख 9 जून 2019 है।

नोटः- हर क्षात्र को हर महीने वज़ीफा दिया जायेगा।

अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव

जामिया नगर, ओखला, दिल्ली-110025

फोन 011-26946205 , 011-23273407

Mob. 9213172981, 09560841844

शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

अमीरे मोहतरम की अबू ज़हबी कांफ्रेन्स में शिर्कत और अपने प्रस्ताव के द्वारा आतंकवाद व दाइश की निन्दा

अल्लाह तआला जो पूरे संसार का पालनहार और मालिक है उसने इन्सानों को सृष्टि में श्रेष्ठतम दर्जा दिया। सभी इन्सान एक ही माँ बाप की औलाद हैं उनके बीच भाई चारे का रिश्ता क़ाइम है उसने अपनी बन्दगी के लिये पैदा किया और आपसी परिचय के लिये कौमों और कबीलों की लड़ी में पिरो दिया। उसने प्यार व मुहब्बत से रहने और नफरतों से दूर रहने का उपदेश एवं आदेश दिया। लेकिन मौजूदा दौर में इन्सान इन्सान का दुश्मन बना हुआ है और पूरी मानवता जख़्मों से चूर है। कत्ल व खंरेज़ी, फितना व फसाद चरम पर है।

खादिमे हरमैन शरीफैन शाह अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज आल सऊद रह० जो अत्यंत दूर दर्शी और वर्तमान हालात पर उनकी गहरी नज़र थी वह मुसलमानों और इस्लाम जगत के अत्यंत बुद्धिमान शासक थे। उन्हें यह बात भली भांति मालूम थी कि मौजूदा दौर में अन्तरधार्मीय वार्ता और विचार विनयम का दरवाज़ा खोल कर गलत फहमियों को दूर करके मानवता खास तौर से मुसलमानों के खिलाफ तेज़ व तुन्द आंधियों पर काबू पाया जा सकता है और मानवता को हेलाकत खेज़ियों से छुटकारा दिलाया जा सकता है। उन्होंने इसका प्रारूप तैयार किया और इसका व्यवहारिक उपाय किया फिर अन्तर धर्मीय डायलाग का सिलसिला चल पड़ा और विश्व स्तर पर इसके सकारात्मक प्रभाव नज़र आने लगे। जगह जगह इस प्रकार के प्रोग्राम और कांफ्रेन्सें होने लगीं और आपसी गलत फहमियों के निवारण का रास्ता प्रशस्त हो गया।

मर्कज़ी जीमअत अहले हदीस हिन्द के पलेट फार्म से भी इस तरह के प्रयास बराबर होते रहे और विभिन्न अवसरों पर सभी संगठनों और अधिकांश धर्मों के मार्गदर्शकों को जमा करके भाई चारे की मिसाल काइम की गई और दूसरों को करीब से देखने और समझने का मौक़ा उपलब्ध किया। मौजूदा दौर में इन्सानों के बीच में नफरत, नाबराबरी, अत्याचार व हिंसा और आतंकवाद के अन्त के लिये निरन्तर प्रयास होते रहे। मानवता की बक़ा एवं संरक्षण के लिये उसके प्रयास न केवल आदर्शपूर्ण और काबिले क़द्र हैं बल्कि इसका एतराफ बिना भेदभाव विचार धारा और धर्म के सभी ने किया है।

शैखुल अज़हर डा० अहमद अत-तैयब जो मज्लिस हुका-माउल मुस्लिमीन के अध्यक्ष भी हैं, के संरक्षण में इस प्रकार की कई कांफ्रेन्सें आयोजित हुईं जिन में दुनिया के प्रतिष्ठित ओलमा-ए-किराम और बुद्धिजीवियों ने शिर्कत की और मानवता के ज्वलंत मुददों पर विस्तृत चर्चा हुई। पिछले ३-५ फरवरी २०१९ को मुत्तहदा अरब अमारात के शासक सम्माननीय खलीफा बिन ज़ायद आल नहयान और दुबई के हाकिम सम्मानीय शैख मुहम्मद बिन राशिद आल मकतूम के सहयोग और मज्लिस हुकमा माउल मुस्लिमीन के द्वारा अबू ज़हबी में अल मोतमर अलआलमी लि उखुव्वतिल आलमिया (भाई चारा पर विश्व-कांफ्रेन्स) के नाम से एक विश्व-कांफ्रेन्स हुई जिसमें खास तौर पर डा० अहमद अत- तैयब शैखुल अज़हर इमामे अकबर मिस्र और ईसाई जगत के महान धार्मिक मार्गदर्शन पोप फ्रांसेस शरीक हुए। इनके अलावा पूरी दुनिया से ओलमा, चिंतक, धर्मगुरू, धार्मिक गुरू, संगठनों, जमाअतों के प्रतिनिधि

ायों ने शिर्कत की। हिन्दुस्तान से भी हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई जैनी आदि सभी धर्मों के और मजहबी पेशवा कांफ्रेन्स में शामिल हुए। इस कांफ्रेन्स में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के सम्माननीय अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने विशेष तौर पर शिर्कत की और उन्होंने इस अवसर पर प्रतिष्ठित वैश्विक धार्मिक रहनुमाओं से मुलाकात की और विभिन्न विषयों पर विचार-विनयम किया और अपने प्रस्ताव के द्वारा दाइश और आतंकवाद की कड़े शब्दों में निन्दा की।

यह भव्य कांफ्रेन्स अत्यंत भाई चारा और शिष्टाचार व दोस्ताना माहौल में आयोजित हुई और इसमें वर्तमान दुनिया की खुशी व ग़मी, समस्याएं व कठिनाइयां विकास एवं पतन, शांति, अशांति, गरीबी, समाजी व सियासी जब्र व जुल्म नाबराबरी, नैतिक पतन, आतंकवाद, अतिवाद नसली व मज़हबी नफरत तमाम विषयों पर चर्चा हुई और कांफ्रेन्स के समापन पर एक संयुक्त बयान वसीकतुल इखवतिल इस्लामिया मिन अजलिास्सलमिल आलमी वल ऐशिल मुश्तरक (विश्व सुरक्षा और सह अस्तित्व के लिये इन्सानी भाई चारे की दस्तावेज़) के शीर्षक से जारी किया गया। पूरी आशा है कि इन्सानी भाई चारा को मज़बूत करने और आपस में लड़ाई पर आमादा दुनिया में अम्न व शान्ति का वातावरण स्थापित करने, आपसी नफरत दुश्मनी और आतंकवाद जैसे घातक एवं हानिकारक रोगों से मानवता को छुटकारा दिलाने में कांफ्रेन्स स्पष्ट भूमिका निभाए गी। अल्लाह करे यह अपने नेक मकसद में कामयाब साबित हो और अल्लाह ही क्षमता देने वाला और सीधे रास्ते की तरफ मार्गदर्शन करने वाला है। (जरीदा तर्जुमान-१६-२८ फरवरी २०१९)

❑ ❑ ❑

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

इस्लाम में जानवरों के साथ सद्व्यवहार

❑ **मुहम्मद गुफरान सलफी**

इस्लाम एक दयावान धर्म है इसकी करूणा मनुष्यों तक ही सीमित नहीं बल्कि प्रत्येक जीवधारी को सम्मिलित है। इसकी शीतल छाया में न केवल मानव संसार को अपने बीच दया करने का आदेश दिया बल्कि समस्त जीवधारियों के साथ भी दया का आग्रह किया है एवं उन्हें किसी प्रकार का कष्ट देने से सख्ती के साथ रोका है।

इस्लाम से पूर्व अरब समाज पशुओं पर भिन्न भिन्न प्रकार से अत्याचार करते थे। उनके यहां पशुओं को अन्धा धुंध मारना एवं उन्हें बांध ाकर निशाना लगाना साधारण बात थी इसी प्रकार मांस खाने के लिए जीवित पशु के शरीर से मांस काट लिया करते। इसके अतिरिक्त पशुओं पर निशाना लगाने की प्रतियोगिताएं भी होती थीं। इसी प्रकार यदि कोई मर जाता तो उसकी सवारी को उसकी कबर पर बांध देते और उसका खाना पानी बन्द कर देते जिसके कारण वह सूख कर मर जाता। परन्तु इस्लाम आया तो उसने पूर्व के समस्त अत्याचारों और दुष्कर्मों पर प्रतिबंध लगा दिया और पशुओं के साथ सदव्यहार करने का आदेश दिया इतना ही नहीं बल्कि उनके साथ सवव्यवाहर करने पर पुण्य की खुशखबरी भी सुनाई जैसा कि नबी स०अ०व० से पूछा गया कि क्या जानवरों के साथ सदव्यवहार करने पर हमारे लिए पुण्य है? तो आप स०अ०व० ने कहा प्रत्येक जीवधारी के साथ सदव्यवहार करने में पुण्य है। (बुखारी ६००८)

इस्लाम ने पशुओं के संग सदव्यवहार की जो शिक्षाएं दी हैं और जिन अधिकारों का वर्णन किया है उनमें से कुछ आदेशों को आपके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. पशुओं पर अत्याचार न किया जायेः इस्लाम ने पशुओं को भी सुख के साथ जीवन यापन करने का अधिकार दिया है जैसा कि इस्लाम की शिक्षा है कि ''न नुकसान उठाओ न नुकसान पहुंचाओ'' (इब्ने माजा-४०) दूसरों को कष्ट देना इस्लाम धर्म में हराम है।

२. पशुओं के सुख दुख का ध्यान रखा जायेः जिन पशुओं से हम सेवा लेते हैं और लाभ उठाते हैं उनसे सम्बंधित इस्लाम की शिक्षा यह है कि उनके सुख दुख का ध्यान रखा जाये उन्हें निश्चित समय पर चारा पानी दिया जाये। अल्लाह तआला कहता है ''तुम खुद खाओ और अपने चौपायों को भी चराओ, कुछ शक़ नहीं कि इसमें अकलमंदों के लिए बहुत सी निशानियां हैं''। (सूरह ताहा ५४)

सख्त कार्य न लिया जाये, उनके रहन सहन की उपयुक्त व्यवस्था की जाये, उनके सहन के अनुसार ही उनसे कार्य कराया जाये। नबी स०अ०व० ने कहा कि ''अगर तुम हरियाली वाले एलाकों से यात्रा करो तो अपनी सवारी को धीरे चलाओ और जानवर को उस हरियाली से लाभ उठाने का अवसर दो और यदि मौसम सूखा हो तो तेज गति से चलाओ ताकि वह अपने स्थान पर जल्दी पहुचें और उन्हें खाने पीने के साथ आराम का अवसर मिले''। (अबू दावूद ३५६९)

रसूल स०अ०व० ने फरमाया

कि यदि किसी ने पक्षी या उससे भी छोटे किसी जीवधारी को बेवजह हत्या की तो अल्लाह के यहां इससे सम्बंधित पूछ ताछ होगी।

जीवित पशुओं का न तो मांस काट कर खाया जाये और न ही उनका कोई अंग काटा जाये नबी स०अ०व० ने ऐसा करने वालों को शाप दिया है जैसा कि इब्ने उमर रजि० कहते हैं कि नबी स०अ०व० ने उस मनुष्य को शाप दिया है जो जीवित पशु का कोई अंश काट दे। (बुखारी ५५१५)

और नबी स०अ०व० ने उस काटे गये अंग को मुरदार और हराम बताते हुए कहा कि जीवित पशु का काटा गया कोई भी अंग मुरदार है। जीव जन्तुओं पर निशाना बाज़ी न किया जाये, पशुओं को निशाना बाज़ी के लिये प्रयोग करने अथवा बांध कर हत्या करने पर इस्लाम ने कठोरता से प्रतिबंध लगाया है। रसूल स०अव० ने फरमाया कि तुम किसी भी प्राणी जीवधारी को कभी भी अपना निशाना न बनाओ। (मुस्लिम ५०५९)

रसूल स०अ०व० ने पशुओं को बांध कर हत्या करने से रोका है किसी भी जीवधारी प्राणी को आग में न जलाया जाये। इस्लाम ने किसी भी जीव जन्तु को आग की सजा देने से मना किया है और अल्लाह के अतिरिक्त किसी भी मनुष्य को इसका अधिकार नहीं दिया है। रूसल स०अ०व० ने कहा कि किसी जीवधारी को आग का दण्ड (सजा) देने का अधिकार केवल अल्लाह तआला ही को है। (बुखारी ३०१६)

पशुओं एवं पंक्षियों को आपस में न लड़ाया जाये। इस्लाम ने पशुओं एवं पक्षियों को आपस में लड़ाने से मना किया है और इस प्रकार के खेलों को अपराध और हराम घोषित किया है क्योंकि इसके कारण वह घायल होकर कष्ट उठाते हैं। एक मुरसल रिवायत है कि रसूल स०अ०व० ने जीव जन्तुओं को आपस में लड़ाने से मना किया है (अबू दाऊद २५६१) गैर हानिकारक जीव जन्तुओं को न मारा जाये जिन पशुओं से हानि का भय न हो एवं वह दरिन्दे न हों तो उनकी हत्या करना इस्लाम धर्म में हराम है।

यही कारण है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चींटी, हुदहुद, एवं मधुमख्खी के मारने पर प्रतिबंध लगा दिया। (अबू दावूद ५२६७)

इस्लाम ने केवल उन्हीं जीव जन्तुओं को मारने की अनुमति दी जो मानव जाति के लिये हानिकारक हों और इसका उद्देश्य केवल मानव जीवन का संरक्षण है। रसूल स०अ०व० ने फरमायाः पांच प्रकार के जीव जन्तु ऐसे हैं जिनको मारने की अनुमति हरम की सीमा में भी है सांप बिच्छु, चील, चूहा और पागल कुत्ता। ताकि मानव का जीवन सुरक्षित रहे। लेकिन आकारण उनको सताने पर कड़ी सज़ा की चेतावनी भी दी है।

ये थे इस्लमा में जीव जन्तुआ और पशुओं पंक्षियों के साथ सद्व्यवहार करने की शिक्षाएं जिससे यह सत्यता स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम पशुओं को किस प्रकार दया की दृष्टि से देखता है। आज के समय में आवश्यकता इस बात की है कि इस्लाम की पवित्र शिक्षाओं एवं उसके उज्जवल दर्पण को संसार के सामने रखा जाये ताकि वह इन शान्तिपूर्ण शिक्षाओं का अवलोकन करके इस्लाम धर्म की सत्यता एवं दयालुता को स्वीकार करें। अल्लाह हमें ऐसा करने की शक्ति प्रदान करे। आमीन

❑ ❑ ❑

तरहीब तुकबन्दी की शक्ल में

सऊदी अरब के सम्माननीय युवराज शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान हफिज़हुल्लाह के हिन्दुस्तान आगमन पर

मरहबा ऐ इब्ने सुलताने अरब, सद मरहबा
मरहबा ऐ फख्रे शुब्बाने अरब, सद मरहबा
मर्कज़े तौहीद व सुन्नत से है आमद आप की
वतने सानी आप का हिन्दुस्ताँ है मर्हबा
ऐ ज़मीने हिन्द, तू है लायक़े इफ्तेख़ार
तू सदा करती है अपने दोस्तों को मरहबा
हर सरे मग़रूर को करती सदा है सरनिगूँ
और सदीक़े हिन्द, इब्ने शाहे सलमाँ मरहबा
हैं बहुत मज़बूत व मुस्तहकम रवाबित "रियाज़" के
मुल्क हिन्दुस्ताँ से है खूब रिश्ता मरहबा
दहशत व वहशत का है माहौल सारे विश्व में
मरकज़े अम्न व अमाँ के पेश्वा, सद मरहबा
सर ज़मीने हिन्द है उलफत मुहब्बत की ज़मीं
मरहबा फखरे अरब सद मरहबा सद मरहबा
हम बहुत मसरूर हैं कि दोस्त मिलने आए हैं
दोस्तों से, दोस्तों के देश में सद मरहबा
दे के दावत हम ने की है दोस्ती का हक़ अदा
मरहबा ऐ मेहमाने जी शर्फ सद मरहबा

(असग़र मेहदी)

शब्द	अर्थ
मरहबा	खुशी, शाबाश, धन्य हो, (प्रशंसा सूचक शब्द)
सद	सौ, अभिप्रायः बहुत खूब
इब्न	पुत्र, बेटा
सुलतान	बादशाह
फख्र	गर्व
शुब्बान	नौजवान
मर्कज	केन्द्र
आमद	आना
सानी	दूसरा
इफ्तेखार	गर्व
मगरूर	घमण्डी
सरनिगूं	पराजित
मुस्तहकम	मज़बूत, स्थिर
श्रवाबित	संबन्ध
दहशत	भय
पेश्वा	रहनुमा, मार्गदर्शक
उलफत	प्रेम
मसरूर	खुश
दावत	आमंत्रण
जीशर्फ	प्रतिष्ठत, सम्माननीय

Posted On 21-22 Every Month
Posted At NDPSO
"Registered with the Registrar of Newspapers for India"

MARCH 2019
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2017 - 2019

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

अहले हदीस कम्पलैक्स और अहले हदीस मंज़िल के दोनों इतिहासिक और महान निमार्ण कार्यों के सिलसिले में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल विभिन्न राज्यों के दौरे पर। इन्शाअल्लाह

जमाअती मित्रों और कौम व मिल्लत के शुभचिंतकों को मालूम है कि अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली और अहले हदीस मंज़िल जामा मस्जिद दिल्ली में दो भव्य तारीखी बिलडिंगों के निमार्ण का काम जारी है। इस सिलसिले में अल हम्दुलिल्लाह अहले हदीस कम्पलैक्स के महान निमार्ण प्रोजेक्ट की दूसरी मंज़िल की ढ़लाई का काम हुआ चाहता है और अहले हदीस मंज़िल में तरमीम और निमार्ण का काम तीसरी मंज़िल तक पहुंच चुका है जो अल्लाह के फज्ल व तौफीक के बाद मुहसिनीने जामअत व जमीअत की सखावत व दानवीरता की देन है। अधिकृत सहयोग के लिये अहबाबे जमाअत सूबाई जमीअतों से तनसीक़ के बाद मस्जिदों में बाजाबता और मुसलसल एलान फरमायें।

जल्द ही मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल आप की खिदमत में हाज़िर हो रहा है। इस महान और तारीखी खैर के काम में अपना भर पूर हिस्सा और रोल अदा करके पुण्य के पात्र बनें।

नोटः- इस सिलसिले में संबन्धित राज्यों के पदधारियों और जिम्मेदारान को सूचना दे दी गयी है।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c 629201058685 (ICICI Bank) Chandni Chowk, Delhi-6
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC 0006292)